E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 130 | प्रयागराज, बुधवार 02 सितम्बर, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

पाक ने एससीओ समिट की तस्वीर से मोदी को हटाया

उनके साथ खड़े ईरानी राष्ट्रपति को भी नहीं दिखाया,एक्स पर एडिटेड फोटो शेयर की

नयी दिल्ली। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर की गई

एक ग्रुप फोटो को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। दरअसल, पीएमओ ने फोटो को एडिट करके उसमें से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीर हटा दी। यह तस्वीर किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में एससीओ समिट के दौरान हुई ग्रुप फोटो की है। इसमें एससीओ के सदस्य देशों के नेता एक मंच पर खड़े नजर आ रहे हैं। मूल तस्वीर में प्रधानमंत्री मोदी और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ दोनों दिखाई दे रहे हैं। भारतीय प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने भी सोशल मीडिया पर इस ग्रुप फोटो को शेयर किया है, जिसमें शहबाज शरीफ भी नजर आ रहे हैं। वहीं, पाकिस्तानी पीएमओ की ओर से शेयर की गई तस्वीर में मोदी दिखाई नहीं दे रहे हैं। बैठक तय नहीं थी, फिर भी मिले मोदी-जिनपिंग-किर्गिस्तान के बिश्केक में एससीओ समिट के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की अचानक मुलाकात हुई। दोनों नेताओं ने हाथ मिलाया और कुछ देर बातचीत की। दोनों के बीच अलग से द्विपक्षीय बैठक पहले से तय नहीं थी। इस दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन भी दोनों नेताओं के साथ नजर आए। एससीओ समिट में अपने संबोधन के दौरान पीएम मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ एकजुट कार्रवाई की जरूरत बताई। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की मौजूदगी में उन्होंने कहा कि आतंकवाद के मुद्दे पर दोहरा रवैया नहीं होना चाहिए। उन्होंने आतंकवाद के पूरे तंत्र को खत्म करने पर जोर दिया। पीएम मोदी के एससीओ भाषण की बड़ी बातें- 1. आतंकवाद को जड़ से खत्म करना जरूरी-सिर्फ आतंकियों को पकड़ना या मारना काफी नहीं है। उन्हें पैसा कौन देता है, भर्ती कैसे होती है और कहां छिपते हैं, इस पूरे नेटवर्क को खत्म करना होगा। 2. आतंकवाद पर सब देश एक साथ रहें-कुछ देशों के लिए आतंकवाद गलत और कुछ के लिए सही नहीं हो सकता। सभी को आतंकवाद के खिलाफ एक जैसी सख्त नीति अपनानी होगी। 3. जंग का समाधान बातचीत से निकले-पश्चिम एशिया में जंग का असर दूर-दूर तक पहुंचता है। देशों के बीच विवाद होने पर युद्ध करने के बजाय बातचीत और कूटनीति से रास्ता निकालना चाहिए। 4. एससीओ संस्कृति और विचारों को जोड़ने का मंच-मोदी ने कहा कि भारत के लिए एससीओ अलग-अलग देशों की सभ्यता, संस्कृति और विचारों को जोड़ने वाला मंच भी है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के 87 साल पूरे होने का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि ऐसी वैश्विक उकसावे वाली घटनाएं नहीं होनी चाहिए, जो नए युद्ध को जन्म दें। पुतिन ने कहा कि देशों को मिलकर काम करना होगा, ताकि दुनिया में नए संघर्षों को भड़कने से रोका जा सके। उन्होंने कहा कि मौजूदा सहयोग और प्रयास इस लक्ष्य को हासिल करने में मदद करेंगे।

होर्मुज में समुद्री माइंस से टकराया टैंकर, लगी आग, इंजन बंद पड़ा, अमेरिका का एक महीने बाद फिर ईरान फिर हमला

तेहरान। होर्मुज स्ट्रेट में एक सुपर टैंकर दो समुद्री माइंस से टकरा गया। ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स (आईआरजीसी) के मुताबिक,

टकराने के बाद टैंकर में भीषण आग लग गई और वह पूरी तरह रुक गया। ईरान ने जहाज का नाम और चालक दल की संख्या नहीं बताई है। आईआरजीसी ने कहा कि टैंकर बिना अनुमति वाले समुद्री रास्ते से गुजर रहा था। ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट में अपने तय सुरक्षा नियमों का पालन नहीं करने वाले दूसरे जहाजों को भी कार्रवाई की चेतावनी दी है। इस बीच अमेरिका ने करीब एक महीने बाद ईरान पर फिर सैन्य कार्रवाई की है। अमेरिकी सेना ने रविवार को होर्मुज स्ट्रेट के पास ईरान के लारक द्वीप पर दो रॉकेट लॉन्चर्स को निशाना बनाया। अमेरिका के मुताबिक, ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के जवान होर्मुज स्ट्रेट में रॉकेट और समुद्री माइंस लॉन्च करने की तैयारी कर रहे थे। ईरानी मीडिया ने हमले में कई सैनिकों और नागरिकों के मारे जाने की बात कही है। ईरान का जॉर्डन में अमेरिकी बेस पर जवाबी हमला-अमेरिकी हमले के बाद ईरान ने जॉर्डन में दो अमेरिकी एयरबेस पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागने का दावा किया। ईरानी मीडिया के मुताबिक, मिसाइलों को अमेरिकी एयरबेस के तकनीकी और मेंटेनेंस इंफ्रास्ट्रक्चर तथा लड़ाकू विमानों की तैनाती वाले क्षेत्रों को निशाना बनाकर दागा गया। वहीं, अल अरबिया के मुताबिक, जॉर्डन की एयर डिफेंस ने ईरानी मिसाइलों को रोक दिया। होर्मुज के बीच में है लारक द्वीप-लारक द्वीप ईरान के प्रमुख बंदरगाह बंदर अब्बास के पास है और होर्मुज के ठीक बीच में स्थित है। यह समुद्री रास्ता दुनिया के लिए बेहद अहम है, क्योंकि युद्ध से पहले दुनिया के इस्तेमाल होने वाले करीब 20फीसदी तेल और लिक्विफाइड नेचुरल गैस की आवाजाही इसी रास्ते से होती थी। रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान फिलहाल इस द्वीप के पास से गुजरने वाले टैंकरों की जांच कर रहा है और जहाजों से स्ट्रेट पार करने के लिए 20 लाख डॉलर यानी करीब रु19 करोड़ तक टैक्स वसूल रहा है। अमेरिकी सेना ने हाल ही में हटाई थीं बारूदी सुरंगें-अमेरिकी सेना ने पिछले हफ्ते होर्मुज स्ट्रेट के अंतरराष्ट्रीय शिपिंग रूट से समुद्री बारूदी सुरंगें हटाने का काम पूरा किया था। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भी कहा था कि अंतरराष्ट्रीय जल क्षेत्र में मौजूद सभी सुरंगों को हटा दिया गया या निष्क्रिय कर दिया गया है। ट्रम्प ने चेतावनी दी थी कि अगर कोई जहाज या नाव होर्मुज स्ट्रेट में नई समुद्री सुरंगें बिछाने की कोशिश करेगी, तो उसे नष्ट कर दिया जाएगा। अमेरिकी अधिकारी के मुताबिक, ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड्स की गतिविधियों पर नजर रखी जा रही थी। होर्मुज को अमेरिका का इलाका बता चुके हैं ट्रम्प-अमेरिकी राष्ट्रपतिट्रम्प होर्मुज स्ट्रेट को 'न्यू यूएस टेरिटरी' यानी नया अमेरिकी इलाका बता चुके हैं। 18 अगस्त को उन्होंने पहली बार होर्मुज पर अमेरिकी नियंत्रण की बात कही थी।इसके बाद उन्होंने 23 अगस्त को ट्रुथ सोशल पर दोबारा ऐसी तस्वीर शेयर की, जिसमें होर्मुज को अमेरिकी इलाके के तौर पर दिखाया गया। होर्मुज स्ट्रेट दुनिया के लिए क्यों अहम? होर्मुज स्ट्रेट फारस की खाड़ी और अरब सागर के बीच का प्रमुख समुद्री रास्ता है। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

नेपाल में फिर बाढ़ का चेतावनी, नदियों का जलस्तर बढ़ा,मौत का आंकड़ा 1 हजार के पार

काठमांडू। नेपाल में नदियों का जलस्तर बढ़ने के बाद 7 जिलों में बाढ़ का नया अलर्ट जारी किया गया है। अधिकारियों ने रसुवा, नुवाकोट, धादिंग, गोरखा, तनहूं, नवलपरासी और चितवन जिलों में नदियों के किनारे बसे इलाकों के लिए चेतावनी जारी की है। 26 अगस्त को तिब्बत में ग्लेशियर टूटने के बाद नेपाल के कई इलाकों में अचानक बाढ़ और भूस्खलन हुआ। इस आपदा में मौत का आंकड़ा 1 हजार के पार हो चुका है। नेपाल में 987 और तिब्बत में 16 लोगों की मौत हुई है। चितवन में अब तक सबसे ज्यादा 321 शव बरामद हुए हैं।

जबकी 4400 से ज्यादा लोग लापता हैं। चीन नेपाल में डीएनए जांच विशेषज्ञ भेजेगा-चीन नेपाल में डीएनए जांच करने वाले विशेषज्ञों की टीम भेजेगा। इसका मकसद बाढ़ में मारे गए उन लोगों की पहचान करने में मदद करना है, जिनकी पहचान नहीं हो पा रही है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने मंगलवार को इसकी जानकारी दी। चीन नेपाल को डीएनए जांच के उपकरण, ड्रोन और पानी साफ करने के उपकरण समेत जरूरी सामान भी भेजेगा। नेपाल बाढ़ में 5 साल की मनीषा 60 घंटे तक मलबे के नीचे फंसी रही। रेस्क्यू टीम ने उसे रसुवा जिले में जिंदा निकाला। होश में आने पर उसने अपने माता-पिता से पूछा, 'आप मुझे बचाने क्यों नहीं आए?' उसके पिता ने बताया कि बाढ़ आने के कुछ ही सेकंड में उनका घर बह गया था और उन्हें लगा था कि बेटी अब नहीं बची होगी। बच्ची को बाद में हेलिकॉप्टर से काठमांडू के अस्पताल ले जाया गया, जहां उसकी हालत अब स्थिर है। नेपाल में बाढ़ के बाद शवों की पहचान करना मुश्किल हो गया है। पोखरा के एक अस्पताल में रखे गए शव नंबर 1003 पर तीन परिवारों ने दावा किया है। अब इसकी पहचान डीएनए टेस्ट से होगी। बड़ी संख्या में परिवार अब अपने लापता परिजनों की पहचान के लिए डीएनए रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं। कुछ परिजन फोटो, कपड़ों, गहनों, टैटू और शरीर के निशानों के आधार पर पहचान करने की कोशिश कर रहे हैं।

मोदी की फिर अपील-जरूरत न हो तो सोना नहीं खरीदें,वैश्विक संकट में भारत की जीडीपी 7.8फीसदी दर से बढ़ी, यह देशवासियों की मेहनत का नतीजा

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की जीडीपी ग्रोथ रेट 7.8फीसदी रहने पर

देशवासियों को बधाई दी। उन्होंने मंगलवार को सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर कहा कि यह उपलब्धि देशवासियों की इच्छाशक्ति, मेहनत और सामूहिक ताकत का नतीजा है। पीएम ने एक बार फिर लोगों से गैर-जरूरी सोने की खरीदारी से बचने की अपील की। उन्होंने कहा, 'अगर जरूरत न हो तो सोना नहीं खरीदना चाहिए।' इससे पहले 11 मई को भी पीएम ने देशवासियों से सोना नहीं खरीदने की अपील की थी। नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्रीः- पूरी दुनिया युद्ध और वैश्विक संकटों से घिरी हुई है। सप्लाई चेन बुरी तरह प्रभावित हैं और 2020 में कोरोना महामारी के दौर से अब तक दुनिया में कहीं भी स्थिरता दिखाई नहीं दे रही है। इसके बावजूद भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। पीएम मोदी ने कहा- देश के अंदर कुछ लोग निराशा फैलाने और 'झूठ की गूंज' के सहारे माहौल खराब करने में लगे हैं। इन सभी चुनौतियों को पार करते हुए भारत ने 7.8फीसदी की विकास दर हासिल की है। देश को यही रफ्तार बनाए रखनी होगी और आगे भी तेजी से विकास करना होगा। उन्होंने कहा, विदेश में घूमने के लिए यात्राएं करने और विदेश में शादी करने से बचना चाहिए। लोगों को मेक इन इंडिया के मंत्र के साथ आगे बढ़ना चाहिए। पीएम ने यह भी कहा, जितना ज्यादा स्वदेशी और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया जाएगा, भारत उतनी ही मजबूती से आगे बढ़ेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि जब भारत अपनी आजादी के 100 साल पूरे करेगा, तब देश की युवा पीढ़ी को एक विकसित भारत सौंपा जाएगा। जानें- पीएम मोदी की पिछली अपील के बाद भारत ने कितना सोना खरीदा, **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

उत्तराखंड में घर में मलबा घुसा, 5 मौतें-केदारनाथ में बारिश रुकी यात्रा फिर शुरू, यूपी के चित्रकूट में बाढ़ से 80 घर गिरे

नई दिल्ली। उत्तर भारत में तेज बारिश का दौर जारी है।

उत्तराखंड के देहरादून में एक कार बरसाती नदी में बह गई। इसमें दो लोगों की मौत हो गई, एक लड़की को रेस्क्यू कर बाहर निकाला। अल्मोड़ा के उड़यूड़ा गांव में भारी बारिश के बाद पहाड़ी से आया मलबा एक घर में घुस गया। हादसे के वक्त घर में सो रहे तीन लोगों की मलबे में दबने से मौत हो गई। वहीं, केदार घाटी में बारिश के चलते रोकी गई केदारनाथ यात्रा फिर शुरू हो गई है। सोनप्रयाग से यात्रियों को धाम के लिए रवाना नहीं किया जा रहा था, लेकिन अब उन्हें जाने दिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के चित्रकूट में मंदाकिनी नदी में आई बाढ़ से 80 से ज्यादा कच्चे मकान गिर गए हैं। बिहार के जहानाबाद में दरधा नदी में अचानक पानी आने के कारण जाफरगंज पुल के ऊपर 2 फीट से ज्यादा पानी बह रहा है। उत्तराखंड में पिछले तीन दिनों से रुक-रुककर बारिश का दौर जारी है। मौसम विभाग ने आज अधिकांश जिलों में हल्की से मध्यम बारिश और गरज के साथ बौछारों की संभावना जताई है। देहरादून और टिहरी में भारी से बहुत भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। बंगाल की खाड़ी के उत्तर-पश्चिमी हिस्से और उससे सटे पश्चिम बंगाल-ओडिशा तट पर बना निम्न दबाव का क्षेत्र झारखंड की ओर बढ़ रहा है।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

कॉमर्शियल सिलेंडर रु11.50 और दूध रु9 तक महंगा,टाटा-हुंडई की कारों की कीमतें रु25 हजार तक बढ़ीं, बिना ई-केवाईसी अटक सकती है एलपीजी सब्सिडी

नयी दिल्ली। 1 सितंबर 2026 से कॉमर्शियल सिलेंडर औसतन 11.50 रुपए महंगा हो

गया है। वहीं, मुंबई में आज से दूध 9 रुपए प्रति किलो तक महंगा हो गया है। इसके अलावा जिन उपभोक्ताओं ने एलपीजी कनेक्शन की ई-केवाईसी पूरी नहीं की है, उन्हें सब्सिडी का फायदा लेने में परेशानी हो सकता है। ई-केवाईसी कराने की समयसीमा 31 अगस्त थी। 1. कॉमर्शियल गैस सिलेंडर औसतन 11.50 रुपए महंगा-बदलावः तेल कंपनियों ने कॉमर्शियल गैस सिलेंडर औसतन रु11.50 रुपए तक महंगा कर दिया है। कोलकाता में इसकी कीमत रु2884 हो गई है। पहले ये रु2872.50 में मिल रहा था। इसके अलावा 5 किलो वाले एलपीजी सिलेंडर 2 रुपए महंगा हो गया है। अब इसे रिफिल कराने के लिए 764 रुपए देने होंगे। असरः कॉमर्शियल सिलेंडर के दाम बढ़ने से रेस्टोरेंट मालिकों का खर्च मामूली बढ़ेगा। ऐसे में वे चाय, नाश्ते और थाली महंगे कर सकते हैं। शादियों की कैटरिंग भी महंगी हो सकती है। 2. मुंबई में आज से दूध 9 रुपए प्रति लीटर महंगा-बदलावः मुंबईः बॉम्बे मिल्क प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन ने 1 सितंबर से थोक दूध की कीमतों में 9 रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी का ऐलान किया है।

इससे थोक दर 93 रुपए से बढ़कर 102 रुपए प्रति लीटर हो गई है, जो 28 फरवरी 2027 तक लागू रहेगी।

तमिलनाडुः एविन दूध के खरीद मूल्य में 3 रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी की गई है। यह दर 41 रुपए से बढ़कर 44 रुपए प्रति लीटर हो गया है। दो हफ्तों से भी कम समय में यह दूसरी बढ़ोतरी है, **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

चीन ने युद्ध की तैयारी के लिए बदला रक्षा कानून,आम लोगों के संसाधन इस्तेमाल कर सकेगी सरकार-नहीं मानने पर सजा होगी

बीजिंग। चीन ने अपने रक्षा कानून में बड़ा बदलाव किया है। अब युद्ध या बड़े संकट के समय सरकार सिर्फ सेना पर निर्भर नहीं रहेगी। जरूरत पड़ने पर आम लोगों, निजी कंपनियों और देश के दूसरे संसाधनों का भी इस्तेमाल किया जा सकेगा। चीन की संसद (नेशनल पीपुल्स कांग्रेस) ने 28 अगस्त को राष्ट्रीय रक्षा लामबंदी कानून में बदलाव को मंजूरी दी। नया कानून 1 अक्टूबर से लागू होगा। नए कानून में सिर्फ संसाधन लेने की ही नहीं, उन्हें सरकार के कब्जे में लेने की व्यवस्था भी है। आदेश मानने से इनकार या जानबूझकर देरी करने पर कार्रवाई और जुर्माने का प्रावधान है। राष्ट्रीय रक्षा लामबंदी कानून 2010 में बनाया गया था। अब पहली बार इसमें बड़ा बदलाव किया गया है। नए कानून में 14 अध्याय और 82 अनुच्छेद हैं। चीन के मुताबिक, इसका मकसद यह है कि किसी खतरे के समय देश शांति से युद्ध की स्थिति में तेजी से जा सके। इसके लिए आर्थिक और सामाजिक ताकत को भी रक्षा के काम में लगाया जा सकेगा।नए कानून में देश की संप्रभुता, एकता, क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा के साथ 'विकास हितों' की रक्षा को भी शामिल किया गया है। अमेरिका के जेम्सटाउन फाउंडेशन की विशेषज्ञ सामंथा हॉफमैन के मुताबिक, नए कानून में पार्टी के नेतृत्व, संगठन, रिजर्व फोर्स, भता,बीजिंग। जरूरी सामान के भंडार और रक्षा से जुड़ी शिक्षा जैसे क्षेत्रों मेंबदलाव किए गए हैं। कानून के अनुच्छेद 3 और 16 में राष्ट्रीय रक्षा लामबंदी की व्यवस्था को कम्युन्स्टि पार्टी की केंद्रीय समिति के अधीन किया गया है।पहले इसमें स्टेट काउंसिल और सेंट्रल मिलिट्री कमीशन की प्रमुख भूमिका थी। अस्पताल, इंटरनेट और ट्रांसपोर्ट को भी तैयार रहना होगा-नए कानून के मुताबिक परिवहन, डाक, दूरसंचार, साइबर सुरक्षा, चिकित्सा और दवा आपूर्ति, खाद्य और अनाज आपूर्ति और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों को राष्ट्रीय रक्षा से जुड़ी जिम्मेदारियों के लिए तैयार रहना होगा।बीजिंग। इनक्षेत्रों की इकाइयों को विशेष टीमें बनानी होंगी। उन्हें ट्रेनिंग भी दी जाएगी, ताकि जरूरत पड़ने पर वे तुरंत काम कर सकें। साइबर सुरक्षा को खास तौर पर शामिल किया गया है। कानून में नई और उन्नत तकनीकों के इस्तेमाल से रक्षा क्षमता बढ़ाने की बात भी कही गई है। रिजर्व फोर्स तैयार करने, भर्ती व्यवस्था मजबूत करने और रणनीतिक रूप से जरूरी सामान का भंडार बढ़ाने के भी प्रावधान हैं। अब चीन में विकास भी राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा-2010 के कानून में चीन की संप्रभुता, एकता, क्षेत्रीय

हिता' का भी शामिल कर दिया गया है। यानी चीन के लिए खतरा सिर्फ सीमा या देश की सुरक्षा से जुड़ा नहीं होगा। अर्थव्यवस्था, जरूरी संसाधनों तक पहुंच, विदेशों में मौजूद चीनी संपत्तियां और तकनीकी विकास से जुड़े हित भी राष्ट्रीय सुरक्षा का हिस्सा माने जा सकते हैं। जेम्सटाउन फाउंडेशन की विशेषज्ञ सामंथा हॉफमैन के मुताबिक, यह बदलाव 2020 में संशोधित चीन के राष्ट्रीय रक्षा कानून से भी जुड़ा है। उस कानून में भी देश के विकास हितों को खतरा होने पर रक्षा लामबंदी शुरू करने की व्यवस्था की गई थी। नया कानून विदेश में रहने वाले भी लागू हो सकता है-चीन के कानून देश की सीमा के बाहर रहने वाले लोगों पर भी लागू हो सकते हैं। यानी विदेश में किया गया कोई काम भी चीन के कानून के दायरे में आ सकता है।1 जुलाई 2026 को चीन ने जातीय एकता और प्रगति संवर्धन कानून लागू किया था। इसकी धारा 63 में कानून को देश के बाहर भी लागू करने का प्रावधान है। इसका एक उदाहरण 2023 में सामने आया था। हांगकांग की छात्रा युएन चिंग-टिंग उस समय जापान में पढ़ रही थीं। सोशल मीडिया पर कुछ पोस्ट करने के बाद जब वह हांगकांग लौटीं, तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें 2020 के राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत दो महीने जेल में रखा गया था। क्या चीन युद्ध की तैयारी कर रहा है? नए कानून के बाद यह सवाल उठ रहा है कि क्या चीन सच में युद्ध की तैयारी कर रहा है। इस पर विशेषज्ञों की राय अलग-अलग है।ब्रसेल्स स्थित सेंटर फॉर रूस यूरोप एशिया स्टडीज की निदेशक थेरेसा फॉलन ने नए कानून पर चिंता जताई। उन्होंने एक्स पर कहा कि दुनिया में युद्ध का खतरा बढ़ रहा है और इसे नजरअंदाज करना मुश्किल है। उन्होंने सवाल किया कि क्या अमेरिका के सैन्य भंडार में कमी, रूस-यूक्रेन युद्ध और ईरान से जुड़ा इजराइल-अमेरिका संघर्ष जैसे हालात चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग को यह सोचने पर मजबूर कर रहे हैं कि युद्ध का समय करीब आ रहा है। वहीं, एशिया सोसाइटी पॉलिसी इंस्टीट्यूट के लाइल मॉरिस का कहना है कि इस कानून को चीन की अचानक शुरू हुई युद्ध तैयारी नहीं माना जाना चाहिए।

नहर का पानी घरों में घुसने से प्रभावित परिवारों को तहसील प्रशासन ने पहुंचाया सुरक्षित शेल्टर होम, एसडीएम सदर ने स्वयं मौके पर पहुंचकर लिया जायजा

प्रभावित परिवारों के ठहरने एवं भोजन-पानी की कराई समुचित व्यवस्था, ग्रामीणों ने तहसील प्रशासन के त्वरित सहयोग के लिए जताया आभार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

रायबरेली। सोमवार को जनपद में लगातार हो रही वर्षा एवं नहर के पानी के ओवरफ्लो होने के कारण सदर तहसील क्षेत्र के अमावां विकासखंड अंतर्गत ग्राम लोधीपुर में कुछ परिवारों के घरों में पानी प्रवेश कर गया। जलभराव के कारण गांव के लगभग 5 से 6 परिवारों के सामने अपने बच्चों एवं महिलाओं सहित सुरक्षित रहने की समस्या उत्पन्न हो गई। स्थिति की सूचना मिलते ही तहसील प्रशासन ने तत्काल सक्रियता दिखाते हुए प्रभावित परिवारों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी। सूचना मिलते ही एसडीएम सदर गौतम सिंह के नेतृत्व में खण्ड विकास अधिकारी संदीप सिंह सहित तहसील प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। एसडीएम सदर ने स्वयं ट्रैक्टर के माध्यम से प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण कर जलभराव की स्थिति का जायजा लिया तथा ग्रामीणों से जानकारी प्राप्त की। उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देशित किया कि किसी भी परिवार को असुविधा न होने पाए और सभी प्रभावित लोगों को तत्काल सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जाए। तहसील प्रशासन द्वारा महिलाओं, बच्चों एवं अन्य प्रभावित सदस्यों सहित 30 से अधिक लोगों को सुरक्षित रूप से शेल्टर होम पहुंचाया गया। शेल्टर होम में उनके ठहरने, भोजन एवं पेयजल सहित आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराई गईं। प्रशासन द्वारा प्रभावित परिवारों की स्थिति पर लगातार निगरानी रखी जा रही है तथा आवश्यकता के अनुसार हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं। एसडीएम सदर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि जलभराव प्रभावित क्षेत्र में लगातार निगरानी बनाए रखते हुए लोगों की सुरक्षा एवं आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने ग्रामीणों से भी अपील की कि जलभराव की स्थिति में घबराएं नहीं और प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे सुरक्षित आश्रय स्थलों का उपयोग करें। तहसील प्रशासन की त्वरित कार्रवाई से प्रभावित परिवारों को समय रहते सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जा सका। प्रशासन द्वारा किए गए इस मानवीय एवं तत्पर प्रयास के लिए लोधीपुर के ग्रामीणों एवं प्रभावित परिवारों ने तहसील प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया।

रायबरेली में गोवंश संरक्षण को मिल रही नई दिशा, 87 गो आश्रय स्थलों में 37,446 गोवंश संरक्षित, मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के तहत 2,921 गोवंश इच्छुक लाभार्थियों को संरक्षण हेतु किए गए सुपुर्द

हरे चारे की उपलब्धता से लेकर गो आश्रय स्थलों को स्वावलम्बी बनाने तक किए जा रहे अभिनव प्रयास

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

रायबरेली। जनपद रायबरेली में निराश्रित एवं बेसहारा गोवंशों के संरक्षण, संवर्धन एवं बेहतर

देखभाल के लिए जिला प्रशासन द्वारा निरंतर प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं। जनपद में संचालित कुल 87 गो आश्रय स्थलों में अब तक 37,446 गोवंशों को संरक्षित किया जा चुका है। गोवंशों के भरण-पोषण, स्वास्थ्य, चारा एवं गर्मी से बचाव सहित गो आश्रय स्थलों की व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न स्तरों पर कार्य किया जा रहा है। जनपद में संचालित गो आश्रय स्थलों में 56 अस्थायी गो आश्रय स्थलों में 21,907, 16 स्थायी गो आश्रय स्थलों में 7,798, 07 वृहद गो संरक्षण केन्द्रों में 5,018 तथा 08 नगर पंचायतों में संचालित गो आश्रय स्थलों में 2,723 गोवंश संरक्षित किए गए हैं। मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के अंतर्गत निराश्रित गोवंशों के संरक्षण में आमजन की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। योजना के तहत अब तक 2,921 गोवंश इच्छुक लाभार्थियों को गो आश्रय स्थलों से संरक्षण हेतु दिए गए हैं, जिससे गोवंशों की देखभाल के साथ-साथ जनसहभागिता को भी बढ़ावा मिल रहा है। गो आश्रय स्थलों में संरक्षित गोवंशों के भरण-पोषण के लिए हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु प्रभावी व्यवस्था की गई है। जनपद के 78 किसानों से हरे चारे की व्यवस्था के लिए अनुबंध किया गया है। इसके अतिरिक्त चारा नीति के अंतर्गत वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता बनाए रखने के उद्देश्य से 56 हेक्टेयर क्षेत्रफल में चरी तथा 05 हेक्टेयर क्षेत्रफल में नैपियर ग्रास की बुवाई के लिए गो आश्रय स्थलों को उपलब्ध कराया गया है। गोवंशों को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से गो आश्रय स्थलों में अजोला उत्पादन शुरू किए जाने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। गो आश्रय स्थलों को केवल संरक्षण केंद्र के रूप में नहीं, बल्कि उन्हें स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर इकाइयों के रूप में विकसित करने के लिए विभिन्न नवाचार किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत बायोगैस प्लांट, वर्मी कम्पोस्ट, बायो फर्टिलाइजर एवं गोबर खाद जैसे कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इन प्रयासों से गोबर एवं अन्य जैविक अपशिष्ट का सदुपयोग करते हुए गो आश्रय स्थलों की आय के अतिरिक्त स्रोत विकसित किए जा सकेंगे। गो आश्रय स्थलों में संरक्षित गोवंशों को गर्मी से राहत दिलाने के लिए भी विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं। गो आश्रय स्थलों में पंखे, कूलर एवं फोगर की व्यवस्था के साथ-साथ ट्रीगार्ड लगाकर सघन वृक्षारोपण भी कराया गया है। इससे गोवंशों को छायादार एवं अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने के साथ गो आश्रय स्थलों के परिसर को हरित बनाने में भी मदद मिल रही है। गो आश्रय स्थलों के बेहतर संचालन एवं संरक्षित गोवंशों की देखभाल के लिए संचालन कर्मियों के साथ-साथ गोसेवा एवं अन्य सामाजिक संगठनों का सहयोग भी लिया जा रहा है। प्रशासन का उद्देश्य जनसहभागिता और विभिन्न विभागों के समन्वय से गोवंश संरक्षण व्यवस्था को और अधिक प्रभावी एवं सुदृढ़ बनाना है। जनपद में किए जा रहे ये प्रयास निराश्रित गोवंशों को सुरक्षित आश्रय उपलब्ध कराने के साथ-साथ गो आश्रय स्थलों को बेहतर, व्यवस्थित, स्वावलम्बी और पर्यावरण अनुकूल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

सेवानिवृत्ति पर 14 रेलकर्मियों को मिला समापक भुगतान, चार कर्मचारियों को पदोन्नति का तोहफा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

वाराणसी। वाराणसी मंडल में सोमवार को सेवानिवृत्त हुए 14

रेलकर्मियों के लिए भावुक पल रहा। मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय स्थित प्रेमचंद सभागार में आयोजित समारोह में मंडल रेल प्रबंधक आशीष जैन ने सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को उनके समापक देयों का भुगतान किया। इसी दौरान खाली हुए चार पदों पर वरीयता क्रम में पात्र कर्मचारियों को पदोन्नति पत्र भी सौंपे गए। खास बात यह रही कि पदोन्नति पाने वाले कर्मचारियों को सेवानिवृत्त हो रहे रेलकर्मियों के हाथों ही पदोन्नति पत्र दिलवाए गए। समारोह में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी अभिनव कुमार सिंह, मंडल वित्त प्रबंधक एन.एन. पाण्डेय, सहायक कार्मिक अधिकारी रामसिंह सहित लेखा एवं कार्मिक विभाग के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे। मंडल रेल प्रबंधक आशीष जैन ने सेवानिवृत्त होने वाले सभी 14 रेलकर्मियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्होंने भारतीय रेल को लंबे समय तक निष्ठा, मेहनत और समर्पण के साथ अपनी सेवाएं दी हैं। उनके योगदान के लिए रेलवे और वाराणसी मंडल सदैव आभारी रहेगा। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्ति जीवन का अंत नहीं, बल्कि नई पारी की शुरुआत है। सेवा के दौरान जिन शौक और रुचियों के लिए समय नहीं मिल पाता था, अब उन्हें पूरा करने का अवसर है। उन्होंने कर्मचारियों से परिवार के साथ अधिक समय बिताकर जीवन की इस नई पारी को सुखद बनाने की अपील की। डीआरएम ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को डिजिटल फ्रॉड से विशेष रूप से सावधान रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाली धनराशि को सुरक्षित रखें और किसी

अनजान फोन कॉल, संदेश या लिंक पर भरोसा न करें। अपना ओटीपी, बैंक संबंधी जानकारी या व्यक्तिगत विवरण किसी अनजान व्यक्ति के साथ साझा न करें। समारोह में चार रिक्त पदों पर पदोन्नति की प्रक्रिया भी पूरी की गई। प्रयागराज रामबाग में मुख्य टिकट निरीक्षक राजकुमार के रिक्त पद पर शर्वेन्द्र कुमार शर्मा को पदोन्नति दी गई। छपरा में वरिष्ठ तकनीशियन शंकर प्रसाद सिंह के रिक्त पद पर मु. अफजल खां को पदोन्नत किया गया। वाराणसी में मुख्य नर्सिंग अधीक्षक एस. रानी चौधरी के रिक्त पद पर रेखा वर्मा को पदोन्नति मिली। कप्तानगंज में कार्यालय अधीक्षक हरिशंकर के रिक्त पद पर अरुण कुमार को पदोन्नत किया गया। वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी अभिनव कुमार सिंह ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को शुभकामनाएं देते हुए आई कार्ड, सेवा प्रमाण पत्र, पीपीओ, डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र सहित अन्य आवश्यक दस्तावेजों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि रेलकर्मियों ने अपने जीवन का लंबा समय रेलवे को दिया है और सेवानिवृत्ति के बाद भी उनकी समस्याओं के समाधान के लिए विभाग तत्पर रहेगा। 31 अगस्त को सेवानिवृत्त होने वालों में मुख्य टिकट निरीक्षक राजकुमार, ट्रेन मैनेजर अश्वनी कुमार, ट्रेन मैनेजर सुधीर कुमार तिवारी, स्टेशन अधीक्षक सुनील कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ तकनीशियन शंकर प्रसाद सिंह, कुक महेंद्र यादव, मुख्य लोको निरीक्षक अशोक चंद्र, सी.से.ई. (सीएंडडब्ल्यू) अनिल कुमार शर्मा, चौकीदार दिलीप कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीशियन रमेश, एस. रानी चौधरी, सफाईवाला कैसर, कार्यालय अधीक्षक हरिशंकर और ट्रैकमैनटेनर अनिल कुमार सिन्हा शामिल रहे।समारोह में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उनके लंबे सेवाकाल के लिए सम्मान और शुभकामनाएं दी गईं। इस आशय की जानकारी मुख्य प्रचार निरीक्षक हिमांशु राव ने मीडिया को दी।

जल भराव पीड़ितों के बीच पहुंचे एसडीएम सदर गौतम सिंह, खुद परखी भोजन की गुणवत्ता और साथ बैठकर किया भोजन, शेल्टर होम में प्रभावित परिवारों से किया सीधा संवाद

भोजन-पानी, स्वच्छता एवं अन्य व्यवस्थाओं को लेकर दिए आवश्यक निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

रायबरेली। विकासखंड अमांवा

के लोधीपुर गांव में नहर के ओवरफ्लो होने से अतरिक्त जल भराव हो जाने पर जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा राहत एवं बचाव कार्य लगातार प्रभावी ढंग से संचालित किए जा रहे हैं। सोमवार को गांव में अचानक पानी भरने से महिला एवं बच्चों सहित करीब 100 लोग जल भराव की स्थिति में फंस गए थे। प्रशासन ने तत्परता दिखाते हुए सभी प्रभावित लोगों को सुरक्षित बाहर निकालकर जतुवा टप्पा गांव स्थित शेल्टर होम में पहुंचाया, जहां उनके ठहरने, भोजन एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की गई है।एसडीएम सदर गौतम सिंह पूरी तहसील प्रशासन की टीम के साथ शेल्टर होम पहुंचे और प्रभावित परिवारों से मुलाकात कर राहत एवं पुनर्वास व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने प्रभावित लोगों से सीधे संवाद करते हुए उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की जानकारी ली तथा प्रशासन की ओर से हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। एसडीएम सदर ने शेल्टर होम में प्रभावित परिवारों को उपलब्ध कराए जा रहे भोजन की गुणवत्ता स्वयं परखी। उन्होंने भोजन की गुणवत्ता एवं व्यवस्थाओं का जायजा लेने के साथ ही प्रभावित लोगों के बीच बैठकर उनके साथ भोजन भी किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि शेल्टर होम में रह रहे सभी प्रभावित परिवारों को गुणवत्तापूर्ण भोजन, स्वच्छ पेयजल, साफ-सफाई, प्रकाश, स्वास्थ्य सुविधाओं सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुचारु रूप से उपलब्ध कराई जाएं, राहत शिविर में रह रहे किसी भी परिवार को किसी प्रकार की असुविधा न होने पाए तथा उनकी समस्याओं का तत्काल समाधान सुनिश्चित किया जाए। एसडीएम ने कहा कि आपदा की इस स्थिति में प्रशासन की प्राथमिकता प्रभावित परिवारों की सुरक्षा एवं उन्हें आवश्यक राहत सुविधाएं उपलब्ध कराना है। तहसील एवं संबंधित विभागों की टीमें लगातार क्षेत्र एवं शेल्टर होम की व्यवस्थाओं पर नजर बनाए हुए हैं। इस दौरान तहसीलदार आवृति श्रीवास्तव, नायब तहसीलदार हरिशंकर सिंह, खंड विकास अधिकारी संदीप सिंह, खंड शिक्षा अधिकारी ऋचा सिंह सहित तहसील एवं विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

अध्यक्ष पेंशनर एसोसिएशन की पत्नी के स्वर्गवासी होने पर शोक सभा का आयोजन-रायबरेली

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

रायबरेली। पेंशनर भवन कलेक्ट्रेट में अध्यक्ष पेंशनर एसोसिएशन एवं संरक्षक राज्य कर्मचारी संघ परिषद के वरिष्ठ नेता श्री रविंद्रकुमार श्रीवास्तव की पत्नी का देहावसान हो जाने के कारण शोक सभा का आयोजन पेंशनर्स एशोसिएशन एवं राज्य कर्मचारी सयुंक्त परिषद ने सयुक्त रूप से किया। बताते चलें कि रविंद्रकुमार श्रीवास्तव की पत्नी स्व0राजकुमारी श्रीवास्तव जिनकी उम्र 67 वर्ष थी तथा काफी दिनों से अस्वस्थ चल रही थी जीवन मरण के इस संघर्ष से लगातार जूझने रहने के पश्चात दिनांक 27 अगस्त 2026 को मैक्स सुपर हॉस्पिटल लखनऊ में देहांत हो गया। शोकसभा में उनके अत्यंत करीबी सहयोगी मित्र बी0एस0 सक्सेना जी बताते हैं कि वह अत्यंत ही मृदभाषी हंसमुख एवं व्यवहार कुशल महिला थी, उनके निधन पर राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के अध्यक्ष रामअशीष यादव ने गहरा शोक व्यक्त किया, जिलामंत्री सी0एम0श्रीवास्तव ने दुःख की इस घड़ी में रविंद्रकुमार श्रीवास्तव को ढांढस बधाते हुए हिम्मत से काम लेने और मृतक की आत्मा को शांति की कामना की। की इस शोकसभा में कोषाधिकारी शालिनी सिंह एवं कोषागार के सभी कर्मचारीगण सहित उपस्थित जनों ने दो मिनट का मौन रहकर श्रद्धांजलि दी।

संस्कृत सप्ताह में गूँजी संस्कृत की स्वर-लहरियाँ, विद्यार्थियों ने प्रस्तुत की प्रतिभा

श्लोक-पाठ से संस्कृत सम्भाषण तक विविध गतिविधियों ने बनाया वातावरण संस्कृतमय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

ब्यौहारी। शासकीय महाविद्यालय ब्यौहारी में संस्कृत

विभाग द्वारा संस्कृत भाषा एवं भारतीय संस्कृति के प्रति विद्यार्थियों में रुचि एवं जागरूकता विकसित करने के उद्देश्य से संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम प्राचार्य डॉ. आर. के. तिवारी के मार्गदर्शन एवं संयोजक डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी के संयोजन

में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। संस्कृत सप्ताह के दौरान विद्यार्थियों के लिए संस्कृत सम्भाषण, श्लोक-पाठ, संस्कृत भाषण, प्रश्नोत्तरी, सुलेख, काव्य-पाठ, संस्कृत गीत, संवाद एवं नाट्य-प्रस्तुति तथा पोस्टर-स्लोगन प्रतियोगिता जैसी विविध गतिविधियाँ आयोजित की गईं। विद्यार्थियों ने इन गतिविधियों में बढ़-चढ़कर सहभागिता करते हुए संस्कृत भाषा के प्रति अपनी अभिरुचि एवं रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में संस्कृत के सरल प्रयोग के लिए प्रेरित किया गया। श्लोक-पाठ एवं काव्य-पाठ ने कार्यक्रम को साहित्यिक गरिमा प्रदान की, वहीं संस्कृत सम्भाषण एवं संवाद गतिविधियों ने संस्कृत को व्यवहार की भाषा के रूप में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. आर. के. तिवारी ने कहा कि संस्कृत भारतीय ज्ञान, संस्कृति, दर्शन एवं साहित्य की महत्वपूर्ण आधारभूत भाषा है। विद्यार्थियों को संस्कृत की समृद्ध परम्परा से जोड़ने के लिए ऐसी गतिविधियाँ निरन्तर आयोजित की जानी चाहिए। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. मनीष कुमार त्रिपाठी ने कहा कि संस्कृत को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर उसे संवाद, साहित्य एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति से जोड़ना आवश्यक है। संस्कृत सप्ताह का उद्देश्य विद्यार्थियों में संस्कृत के प्रति आत्मीयता और गौरव की भावना विकसित करना है। संस्कृत सप्ताह के समापन अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं प्रोत्साहन प्रदान किया गया। कार्यक्रम की सफलता में महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का सराहनीय सहयोग रहा।

हर्षवर्धन बाजपेयी की पहल लाई बदलाव की बड़ी उम्मीद, जॉर्ज टाउन और शहर उत्तरी क्षेत्र को जलभराव से मिलेगी राहत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। जनसमस्या को प्राथमिकता देकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तक पहुंचाई आवाज़, रु30 करोड़ की पंपिंग

स्टेशन योजना पर आगे बढ़ी कार्रवाई। प्रयागराज। जॉर्ज टाउन और शहर उत्तरी क्षेत्र के लोगों के लिए जलभराव की वर्षों पुरानी समस्या के समाधान की दिशा में एक बड़ी उम्मीद जगी है। क्षेत्र की इस गंभीर जनसमस्या को लेकर हर्षवर्धन बाजपेयी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के समक्ष प्रभावी ढंग से अपनी बात रखी। उनके अनुरोध पर क्षेत्र में जलभराव की समस्या दूर करने के लिए रु30 करोड़ की लागत से नई पंपिंग स्टेशन योजना पर कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं।मुख्यमंत्री ने प्रस्ताव को आगे बढ़ाते हुए नगर विकास मंत्रालय को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। प्रस्तावित योजना के धरातल पर उतरने के बाद बरसात के दिनों में जॉर्ज टाउन सहित शहर उत्तरी क्षेत्र के कई इलाकों में होने वाले जलभराव से लोगों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। जनता की आवाज़ को समाधान तक पहुंचाना ही असली जनसेवा-हर्षवर्धन बाजपेयी की यह पहल इस बात का उदाहरण है कि जब कोई जनप्रतिनिधि क्षेत्र की समस्याओं को केवल मुद्दा बनाने के बजाय समाधान की दिशा में लगातार प्रयास करता है, तो बदलाव की राह तैयार होती है। जलभराव केवल सड़क पर जमा पानी की समस्या नहीं है। इससे आम नागरिकों की आवाजाही, व्यापार, विद्यार्थियों, बुजुर्गों और स्थानीय निवासियों के दैनिक जीवन पर सीधा असर पड़ता है। ऐसे में पंपिंग स्टेशन की योजना को क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। 'समस्या बड़ी हो सकती है, लेकिन संकल्प उससे बड़ा होना चाहिए' हर्षवर्धन बाजपेयी की पहल से जुड़े इस प्रयास का संदेश साफ है–जनता की समस्या को मजबूती से उठाया जाए, लगातार प्रयास किया जाए और समाधान मिलने तक आवाज़ बुलंद रखी जाए। यह पहल उन सभी के लिए प्रेरणा है जो अपने क्षेत्र की समस्याओं को लेकर निराश हो जाते हैं। बदलाव एक दिन में नहीं आता, लेकिन ईमानदार प्रयास, मजबूत इच्छाशक्ति और जनता के प्रति प्रतिबद्धता मिलकर बड़े बदलाव की शुरुआत जरूर कर सकते हैं। जॉर्ज टाउन और शहर उत्तरी क्षेत्र के लिए यह सिर्फ रु30 करोड़ की योजना नहीं, बल्कि बेहतर जलनिकासी, सुरक्षित सड़कों और राहत भरे भविष्य की एक बड़ी उम्मीद है।हर्षवर्धन बाजपेयी की पहल – जनसमस्या से जनसमाधान तक। 'जहाँ समस्या है, वहीं समाधान की कोशिश भी होनी चाहिए।'

नटराजांजलि डांस अकादमी का वार्षिक समारोह भव्यता एवं शास्त्रीय नृत्य की मनोहारी प्रस्तुतियों के साथ सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नोएडा। नटराजांजलि डांस अकादमी, एक प्रतिष्ठित एवं प्रीमियम भरतनाट्यम संस्थान, का वार्षिक समारोह इंडस वैली पब्लिक स्कूल, नोएडा के आकृति ऑडिटोरियम में भव्य रूप से आयोजित किया गया। अकादमी की संस्थापक एवं गुरु श्रीमती इप्शिता भट्टाचार्य के मार्गदर्शन में संस्था पिछले 12 वर्षों से अधिक समय से नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा में सफलतापूर्वक भरतनाट्यम का प्रशिक्षण दे रही है। संस्था में विभिन्न आयु वर्ग के विद्यार्थियों को शास्त्रीय नृत्य की विधिवत शिक्षा प्रदान की जाती है। समारोह में विद्यार्थियों ने भरतनाट्यम की अनेक मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नृत्य-नाटिका 'द पपेट मास्टर' रही, जिसमें विभिन्न भावनाओं द्वारा मनुष्य के जीवन को नियंत्रित किए जाने तथा अंततः आत्मबोध, ज्ञान और परमात्मा से जुड़ने की आध्यात्मिक यात्रा को नृत्य एवं अभिनय के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए अनेक प्रतिष्ठित अतिथियों एवं गुरुओं की

गरिमामयी उपस्थिति रही।इनमें श्रीमती विमला बाथम, भारतीय व्यवसायी, पूर्व भाजपा विधायक एवं वर्तमान अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग; गुरु श्री आर.वी. त्यागराजन एवं श्रीमती राजेश्वरी त्यागराजन, संस्थापक निदेशक, थ्यागराजा सेंटर फॉर म्यूजिक एंड डांस, नोएडा; गुरु सदानंद बिस्वास, संस्थापक एवं महासचिव, कथक धरोहर (एनजीओ); गुरु संगीता कुलश्रेष्ठ, संस्थापक निदेशक, नृत्यांजलि इंस्टीट्यूट ऑफ भरतनाट्यम, नोएडा; तथा गुरु श्रीमती सुमिता दत्ता रॉय एवं श्री संदीप रॉय, संस्थापक एवं निदेशक, श्रीनृत्यांजलि - ए सेंटर ऑफ ग्लोबल इंडियन आर्ट एंड कल्चर (Regd.) शामिल रहे। सभी अतिथियों ने विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना करते हुए गुरु श्रीमती इप्शिता भट्टाचार्य एवं नटराजांजलि डांस अकादमी को भारतीय शास्त्रीय नृत्य की समृद्ध परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए शुभकामनाएं दीं।समारोह ने कला, साधना, संस्कृति और आध्यात्मिकता के सुंदर समन्वय के साथ भारतीय शास्त्रीय नृत्य की गरिमा को एक बार फिर जीवंत कर दिया।

'ऑपरेशन शुद्धि' के तहत थाना दुद्धी पुलिस एवं एसओजी/सर्विलांस टीम की संयुक्त कार्रवाई, अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करी गिरोह से जुड़े 01 शातिर तस्कर गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। उड़ीसा से लखनऊ के मटियारी/चिनहट क्षेत्र में सप्लाई के लिए ले जाया जा रहा 55.989 किलोग्राम अवैध गांजा बरामद, अनुमानित कीमत लगभग रु28 लाख, तस्करी में प्रयुक्त वरना कार, अनुमानित कीमत रु7 लाख, 01 एण्ड्रॉयड मोबाइल एवं रु10,000 की एटीएम निकासी से संबंधित पर्ची बरामद, कुल बरामदगी की अनुमानित कीमत लगभग रु35 लाख, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अभिषेक वर्मा के निर्देशन में 'ऑपरेशन शुद्धि' के तहत मादक पदार्थों की तस्करी एवं अवैध कारोबार में संलिप्त अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में, अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन ऋषभ रुणवाल एवं क्षेत्राधिकारी दुद्धी ड विनय प्रभाकर साहनीड के पर्यवेक्षण में तथा प्रभारी निरीक्षक थाना दुद्धी श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के कुशल नेतृत्व में थाना दुद्धी पुलिस टीम को बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। थाना दुद्धी पुलिस एवं एसओजी/सर्विलांस टीम की संयुक्त टीम द्वारा अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करी गिरोह से जुड़े एक शातिर अभियुक्त को गिरफ्तार करते हुए उसके कब्जे से उड़ीसा से लखनऊ के मटियारी/चिनहट क्षेत्र में सप्लाई के लिए ले जाया जा रहा 53 बण्डलों में कुल 55.989 किलोग्राम अवैध गांजा, जिसकी अनुमानित कीमत लगभग रु28 लाख, तस्करी में प्रयुक्त बरना कार संख्या यूपी42सीई-6539, अनुमानित कीमत रु7 लाख, 01 एण्ड्रॉयड मोबाइल फोन एवं रु10,000 की एटीएम निकासी से संबंधित पर्ची बरामद की गई है। कुल बरामदगी की अनुमानित कीमत लगभग रु35 लाख है। घटना का संक्षिप्त विवरण-दिनांक 01.09.2026 को थाना दुद्धी पुलिस द्वारा म्योरपुर तिराहा पर संदिग्ध वाहनों की चेकिंग की जा रही थी। इसी दौरान मुखबिर की सूचना पर विंढमगंज की ओर से आ रही सफेद रंग की कार को रोकने का प्रयास किया गया, परन्तु चालक कार को तेज गति से लेकर रजखड़ की ओर भागने लगा। पुलिस टीम द्वारा पीछा कर रजखड़ घाटी के पास घेराबंदी कर वाहन को रोक लिया गया तथा चालक को पकड़ लिया गया। कृत कार्यवाही-पकड़े गए अभियुक्त ऋषभ सिंह उर्फ रिशु सिंह की निशानदेही पर वाहन की डिग्गी से खाकी रंग के टेप में लिपटे 53 बण्डलों

में कुल 55.989 किलोग्राम अवैध गांजा बरामद हुआ। क्षेत्राधिकारी दुद्धी श्री विनय प्रभाकर साहनी एवं फील्ड यूनिट की उपस्थिति में बरामदगी की कार्रवाई की गई। अभियुक्त के कब्जे से 01 एण्ड्रॉयड मोबाइल फोन एवं रु10,000 की एटीएम निकासी से संबंधित पर्ची भी बरामद हुई। वाहन को आवश्यक कागजात न होने के कारण एमवी एक्ट की धारा 207 के तहत सीज किया गया। गिरफ्तारी एवं बरामदगी के आधार पर थाना दुद्धी पर मु0अ0सं0 246/2026, धारा 8/20/27ए/29/60 एनडीपीएस एक्ट के तहत अभियोग पंजीकृत कर अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। पूछताछ का विवरण-गिरफ्तार अभियुक्त ऋषभ सिंह उर्फ रिशु सिंह से पूछताछ में प्रकाश में आया कि वह अन्य साथियों के साथ मिलकर उड़ीसा के बोध क्षेत्र से गांजा खरीदकर झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ के रास्ते सोनभद्र होते हुए लखनऊ के मटियारी एवं चिनहट क्षेत्र में ले जाकर बेचने का कार्य करता है। अभियुक्त द्वारा यह भी बताया गया कि इस बार वह अपने साथियों के साथ उड़ीसा के बोध क्षेत्र से 53 बण्डल गांजा खरीदकर लखनऊ के मटियारी/चिनहट क्षेत्र में सप्लाई करने के उद्देश्य से ला रहा था, तभी थाना दुद्धी पुलिस द्वारा उसे गिरफ्तार कर लिया गया। अभियुक्त के अनुसार तस्करी में प्रयुक्त वाहन भी उसके साथी का है। तस्करी में संलिप्त सभी लोग आपस में व्हाट्सऐप कॉल के माध्यम से संपर्क करते हैं। पूछताछ में प्रकाश में आए अन्य व्यक्तियों की भूमिका एवं उड़ीसा से सोनभद्र होते हुए लखनऊ के मटियारी/चिनहट तक संचालित अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करी नेटवर्क की गहनता से जांच की जा रही है। बरामद मोबाइल फोन एवं अन्य तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर नेटवर्क से जुड़े अन्य व्यक्तियों को चिन्हित कर आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-1. ऋषभ सिंह उर्फ रिशु सिंह पुत्र नकुल उर्फ संदीप सिंह, उम्र करीब 25 वर्ष, निवासी अलीपुर, थाना कासिमपुर, तहसील संडीला, जनपद हरदोई। बरामदगी का विवरण- 53 बण्डलों में कुल 55.989 किलोग्राम अवैध गांजा - अनुमानित कीमत लगभग रु28 लाख। वरना कार संख्या यूपी42सीई-6539- अनुमानित कीमत रु7लाख। 01 एण्ड्रॉयड मोबाइल फोन। रु10,000 की एटीएम निकासी से संबंधित पर्ची। कुल अनुमानित कीमत लगभग रु35 लाख। गिरफ्तार अभियुक्त अभियुक्त ऋषभ सिंह उर्फ रिशु सिंह का आपराधिक इतिहास- 1. मु0अ0सं0 1267/2022, धारा 379, 411 भा0द0वि0, थाना कोतवाली, जनपद बाराबंकी।2. मु0अ0सं0 57/2017, धारा 394, 411 भा0द0वि0, थाना आलमबाग, जनपद लखनऊ। 3. मु0अ0सं0 314/2017, धारा 392, 411 भा0द0वि0, थाना पारा, जनपद लखनऊ पश्चिमी। 4. मु0अ0सं0 516/2017, धारा 3(2)(न) एससी/एसटी अधिनियम व 302 भा0द0वि0, थाना ठाकुरगंज, जनपद लखनऊ पश्चिमी। 5. मु0अ0सं0 204/2022, धारा 34, 392, 411 भा0द0वि0, थाना पीजीआई, जनपद लखनऊ दक्षिणी। 6. मु0अ0सं0 222/2022, धारा 379, 411 भा0द0वि0, थाना पीजीआई, जनपद लखनऊ दक्षिणी। 7. मु0अ0सं0 223/2022, धारा 25/3 आयुध अधिनियम, थाना पीजीआई, जनपद लखनऊ दक्षिणी।8. मु0अ0सं0 671/2022, धारा 120बी, 34, 392, 411, 413, 420, 458, 506 भा0द0वि0, थाना ठाकुरगंज, जनपद लखनऊ पश्चिमी। 9. मु0अ0सं0 81/2022, धारा 392, 411 भा0द0वि0, थाना बाबू बनारसी दास, जनपद लखनऊ पूर्वी। 10. मु0अ0सं0 253/2025, धारा 305ए, 317(2), 331(4) बीएनएस, थाना तालकटोरा, जनपद लखनऊ पश्चिमी। 11. मु0अ0सं0 13/2026, धारा 125ए, 125(बी), 281 बीएनएस, थाना तालकटोरा, जनपद लखनऊ पश्चिमी। 12. मु0अ0सं0 246/2026, धारा 8/20/27ए/29/60 एनडीपीएस एक्ट, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम-1. प्रभारी निरीक्षक श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र। 2. निरीक्षक नागेश सिंह, एसओजी/सर्विलांस प्रभारी मय टीम। 3. उ0नि0 संजय सिंह, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र। 4. उ0नि0 हरिकेश राम आजाद, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र। 5. हे0का0 लक्ष्मण शंकर यादव, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र। 6. का0 राहुल कुमार बिन्द, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र। 7. का0 गणेश मिश्रा, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र। 8. का0 अरविन्द कुमार यादव, चालक, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र। 9. का0 सुनील सरोज, थाना दुद्धी, जनपद सोनभद्र।

जीएल बजाज के आठ इनक्यूबेटेड स्टार्टअप्स को मिला सम्मान और फंडिंग सपोर्ट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नोएडा। जीएल बजाज सेंटर फॉर रिसर्च एंड इनक्यूबेशन के लिए एक बड़ी उपलब्धि सामने आई

है। सेंटर से जुड़े आठ इनक्यूबेटेड स्टार्टअप्स को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ स्थित लोक भवन में आयोजित प्रतिष्ठित स्टार्टअप कार्यक्रम में विभिन्न स्टार्टअप ग्रांट के माध्यम से सम्मान एवं फंडिंग सपोर्ट प्रदान किया गया। यह कार्यक्रम उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन लिमिटेड (यूपीएलसी), उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ की गरिमामयी उपस्थिति रही। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों, तकनीकी विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की। आठ स्टार्टअप्स को मिला फंडिंग सपोर्ट:-जीएल बजाज सेंटर फॉर रिसर्च एंड इनक्यूबेशन से जुड़े जिन स्टार्टअप्स को मान्यता एवं फंडिंग सपोर्ट प्राप्त हुआ, उनमें एससीएस यूनिवर्सल टेक प्राइवेट लिमिटेड (SCS Universal Tech Private Limited), एगहेड प्राइवेट लिमिटेड (Egghead Private Limited), वेक्टर फोर्स नाइन प्राइवेट लिमिटेड (Vector Force Nine Private Limited), सॉल्यूशनएआई प्राइवेट लिमिटेड (SolutionAI Private Limited), न्यूराएक्सियन लैब्स प्राइवेट लिमिटेड (NeuraXion Labs Private Limited), माली काका इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (Mali Kaka India Private Limited), पीएचएसआई टेक्नोलॉजीज एंड रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड (PHSI Technologies and Research Private Limited) तथा विश्वक्सेनाह हर्ब्स एंड एरोमैटिक प्राइवेट लिमिटेड (Vishvaksenah HeRs and Aromatic Pvt. Ltd.) शामिल हैं। यह उपलब्धि इन स्टार्टअप्स के नवाचार, उद्यमशीलता और तकनीक आधारित समाधानों की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को दर्शाती है। साथ ही, यह जीएल बजाज के मजबूत स्टार्टअप इनक्यूबेशन इकोसिस्टम और उद्यमिता को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करती है।जीएल बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस (ग्रेटर नोएडा एवं मथुरा) के वाइस चेयरमैन श्री पंकज अग्रवाल ने सभी स्टार्टअप संस्थापकों एवं टीमों को इस उपलब्धि पर बधाई दी। उन्होंने नवाचार और उद्यमिता के क्षेत्र में स्टार्टअप्स द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। वहीं, जीएल बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस (ग्रेटर नोएडा एवं मथुरा) के सीईओ श्री कार्तिकेय अग्रवाल ने भी सभी संस्थापकों और टीमों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि जीएल बजाज नवाचार, अनुसंधान, उद्यमिता और तकनीक आधारित स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा दे रहा जीएल बजाज-जीएल बजाज सेंटर फॉर रिसर्च एंड इनक्यूबेशन का उद्देश्य उभरते उद्यमियों, शोधकर्ताओं और नवोन्मेषकों को एक ऐसा मंच प्रदान करना है, जहां नए विचारों को आवश्यक मार्गदर्शन और सहयोग के साथ विकसित किया जा सके। इनक्यूबेशन सपोर्ट, मेंटरशिप, नवाचार के अवसर और उद्योग से जुड़ाव के माध्यम से सेंटर स्टार्टअप्स को अपने विचारों को प्रभावी, टिकाऊ और विस्तार योग्य व्यवसायों में बदलने की दिशा में सहयोग प्रदान कर रहा है।आठ इनक्यूबेटेड स्टार्टअप्स को मिली यह मान्यता उत्तर प्रदेश के स्टार्टअप इकोसिस्टम में जीएल बजाज के बढ़ते योगदान को दर्शाती है। यह उपलब्धि संस्थान के उस विजन को भी मजबूत करती है, जिसके तहत नवाचार और उद्यमिता के माध्यम से उभरते उद्यमियों को प्रभावशाली एवं तकनीक आधारित समाधान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

बेलवनिया में तालाब की बन्धी टूटने से जलजमाव, प्रशासन ने संभाला मोर्चा,जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के निर्देश पर प्रभावित परिवारों को सुरक्षित निकालकर पंचायत भवन पहुंचाया गया

मौके पर एसडीएम-पुलिस टीम तैनात, जल निकासी के साथ राहत एवं बचाव कार्य जारी,भोजन, राहत किट एवं चिकित्सा की व्यवस्था सुनिश्चित, स्थिति पर सतत निगरानी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। ग्राम बेलवनिया, तहसील घोरावल में मंगलवार को लगभग 200 से 250 बीघे क्षेत्रफल वाले नकटी निबहवा तालाब की बन्धी टूटने से गांव में जलजमाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। पानी बढ़ने से 11 परिवारों के घरों में पानी प्रवेश कर गया। घटना की सूचना मिलते ही जिलाधिकारी चर्चित गौड़ के निर्देश पर प्रशासन ने तत्परता से राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया। प्रशासनिक टीम ने प्रभावित क्षेत्र में पहुंचकर सर्वप्रथम लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित की। पानी से प्रभावित सभी 11 परिवारों को सुरक्षित निकालकर नजदीकी पंचायत भवन में अस्थायी रूप से ठहराया गया है, जहां उनके भोजन एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। प्रभावित परिवारों में बबूंदर पुत्र नन्हकू, बाबूलाल पुत्र नन्हकू, बंधु पुत्र वीरे, हुकुम अली पुत्र अली कासी, अबू हुसैन पुत्र हमीद, तौलन पुत्र सादिक, आजाद पुत्र शमीउल्लाह, छोटेलाल पुत्र मक्खन राम, भरत लाल पुत्र पतिराम, नखडू पुत्र राम जियावन एवं अमृत लाल पुत्र रामविलास वेड परिवार शामिल हैं। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने समाधान के लिए मेडिकल टीम भी मौके पर पहुंच चुकी है।

निर्देशित किया है कि प्रभावित परिवारों की सुरक्षा एवं आवश्यक

सुविधाओं में किसी प्रकार की कमी न रहे। जल निकासी का कार्य तेजी से कराया जाए तथा प्रत्येक प्रभावित परिवार को नियमानुसार आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई जाए। मौके पर उप जिलाधिकारी घोरावल एवं पुलिस टीम मौजूद रहकर राहत कार्यों एवं स्थिति की निगरानी कर रही हैं। गांव में जमा पानी की निकासी का कार्य लगातार जारी है। स्वास्थ्य संबंधी किसी भी आवश्यकता के त्वरित प्रभावित परिवारों के लिए भोजन एवं आवश्यक राहत किट की व्यवस्था सुनिश्चित कर ली गई है और उनका वितरण कराया जा रहा है। प्रशासन द्वारा प्रभावित क्षेत्र की स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है। जिलाधिकारी के निर्देश पर संबंधित अधिकारियों एवं टीमों को मौके पर सक्रिय रखा गया है। प्रभावित परिवारों की सुरक्षा, स्वास्थ्य, भोजन एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं को प्राथमिकता देते हुए राहत एवं बचाव कार्य निरंतर जारी है।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन, प्रयागराज के अध्यक्ष पद के लिए अधिवक्ता अशोक सिंह ने अपना नामांकन दाखिल किया है। अध्यक्ष पद के चुनाव को लेकर अधिवक्ताओं के बीच सरगर्मियां तेज़ हो गई हैं। अशोक सिंह के नामांकन के बाद उनके समर्थकों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। अधिवक्ता अशोक सिंह ने कहा कि उनका उद्देश्य बार के सदस्यों के हितों की मजबूती से आवाज़ उठाना और अधिवक्ताओं की समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी प्रयास करना है।

खाद्य सुरक्षा और सम्पन्नता का आधार है कृषि : डा0 प्रवीन चरन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। प्रसार निदेशालय, सैम हिग्गिनबॉटम कृषि

प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज में दिनांक 31 अगस्त से 04 सितम्बर 2026 तक संचालित होने वाले सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजनान्तर्गत जनपद-सोनभद्र के कृषकों का पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। जिसमे उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में निदेशक प्रसार डा0 प्रवीन चरन ने कहा कि शुआट्स विश्वविद्यालय वर्ष 1910 से कृषकों की सेवा में कार्यरत है एवं शोध, शिक्षण एवं प्रसार के माध्यम से कृषकों के बीच अपनी एक अलग पहचान स्थापित कर चुका है एवं वर्तमान समय में कुलपति प्रो0 (डा0) जोनाथन ए. लाल के मार्गदर्शन में कृषकों के हित में निरन्तर कार्यरत है तथा कृषि के क्षेत्र में अग्रेसर है। निदेशक प्रसार डा0 प्रवीन चरन ने कहा कि माननीय कुलपति महोदय की अगुवाई में विश्वविद्यालय के शोध कार्य के नवीन तकनीकियों से ऊचाइयों को छू रहे हैं एवं देश की खाद्य आपूर्ति में विश्वद्यिालय एक अभूतपूर्व सहयोग प्रदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से आपको कई प्रकार की नवीन कृषि तकनीकियों को समझने का अवसर प्राप्त होगा। उन्होनें बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शोध प्रक्षेत्रों एवं प्रयोगशालाओं में जाकर आपको कई प्रकार के शोध कार्यों को देखने व जानने का भी अवसर मिलेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्होंने कृषकों को बताया कि यह विश्वविद्यालययह संस्थान भारत ही नहीं एशिया महाद्वीप का सबसे पुराना कृषि संस्थान है जिसमें कृषकों को कृषि की प्रायोगिक शिक्षा प्रदान की जा रही है। इस संस्थान के विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित होने के उपरांत उ0प्र0 सरकार के सहयोग से कृषकों का कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्रों में प्रशिक्षण का कार्यक्रम प्रसार निदेशालय के माध्यम से निरंतर संचालित किया जा रहा है जिसका क्षेत्र में उत्पादकता एवं कृषक आय में वृद्धि के रूप में प्रदर्शित होना आरम्भहो चुका है। प्रसार निदेशालय के वैज्ञानिकों के कृषकों हेतु उपयोगी ज्ञान से प्रभावित होकर विन्ध्यांचल एवं प्रयागराज मण्डलों के कृषक इस विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। वैज्ञानिक डा0 मनीष कुमार केसरवानी ने मोटे अनाजों की उपयोगिता के बारे में बताते हुए कहा कि मोटे अनाजों के दैनिक उपयोग से ग्रामीण महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण की समस्या को प्रभावी रूप से दूर किया जा सकता है। मोटे अनाजों में कैल्शियम प्रचुर मात्रा में उपस्थित रहता है जिसके सेवन से महिलाओं में गर्भावस्था के समय हड्डियों में होने वाली समस्याओं को दूर किया जा सकता है साथ ही अन्य मोटे अनाजों में लौह तत्व की प्रचुर मात्रा उपस्थित होती है जिससे बच्चों एवं वृद्धों को प्रचुर मात्रा में इन पोषक तत्वों की प्राप्ति हो जाती है। इस अवसर पर उन्होनें मोटे अनाजों के प्रसंस्कृत उत्पादों को घरेलू एवं व्यवसायिक स्तर पर तैयार करने की तकनीकी जानकारी प्रदान की। कृषि विज्ञान केन्द्र प्रयागराज के प्रभारी डा0 मुकेश पी. मसीह ने कृषकों को फूलों से सम्बन्धित उत्पादन, उपयोगिता एवं महत्व पर विस्तृत चर्चा की एवं कृषकों को अवगत कराया कि अपने क्षेत्र की भौगोलिकता को देखते हुए जो भी पुष्प उत्पादन व्यवसाय से जुड़ता है वह एक अतिरिक्त लाभ प्राप्त कर सकता है जो किसानों की आर्थिक सुदृढता पर एक नई आशा की किरण होगी।इस अवसर पर प्रशिक्षण समन्वयक एवं वैज्ञानिक डा0 टी. डी. मिश्रा ने प्रतिभागी कृषकों का स्वागत किया एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा से कृषकों को परिचित कराया एवं उपस्थित कृषकों को बताया कि अच्छा उत्पादन प्राप्त करने में शुद्ध बीज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्च गुणवत्ता वाले बीज फसल का उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ उत्पादन लागत भी कम कर सकते हैं. उन्होनें कृषकों को विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे बीज उत्पादन कार्यक्रम के साथ-साथ बीज उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कृषकों को खरीफ दलहनी फसलों की उत्पादन तकनीक की जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि दलहनी फसलों का क्षेत्र निरंतर कम हो रहा है परंतु दलहनी फसलों की मूल्य वृद्धि बाजार में निरंतर हो रही है। उन्होनें कृषकों से दलहनी फसलों की खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने के साथ ही आह्वान किया कि दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग से इसकी उत्पादकता में कम खर्च में अत्यधिक वृद्धि की जा सकती है। वैज्ञानिक प्रो0 (डा0) रामपाल सिंह ने कृषकों को पशुपालन सम्बन्धित विषय पर जानकारी देते हुए वर्षा ऋतु में पशुओं के रख-रखाव की विस्तृत जानकारी प्रदान की साथ ही उन्होंने पशुओं के पोषण प्रबन्धन, चारा प्रबन्धन आदि की वैज्ञानिक तकनीक से परिचित कराया ।प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर संयुक्त निदेशक प्रसार प्रो0 (डा0) ए. के. चौरसिया, प्रो0 (डा0) जी. एम. लाल, डा0 सरवेन्द्र कुमार, डा0 शैलेन्द्र कुमार सिंह, डा0 शिशिर कुमार एवं हिन्दी ऑफीसर श्रीमती मीना नेथन आदि उपस्थित रहे। डा0 प्रवीन चरन निदेशक प्रसार।

नई मूल्यांकन सूची पर 07 सितंबर तक सुझाव एवं आपत्तियां आमंत्रित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद सोनभद्र में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए नई जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के निर्देशानुसार 01 सितंबर, 2026 से संशोधित मूल्यांकन सूची

मूल्यांकन सूची (सर्किल रेट) तैयार की जा रही है। इसके लिए उपजिलाधिकारियों एवं उपनिबंधकों द्वारा क्षेत्रवार संशोधन, परिवर्तन एवं विलोपन संबंधी प्रस्ताव तैयार किए गए हैं। मूल्यांकन सूची तैयार करते समय खसरा संख्या आधारित अद्यतन आंकड़ों, भूमि की वास्तविक उपयोगिता, क्षेत्रीय परिस्थितियों तथा प्रचलित बाजार दरों को आधार बनाया गया है, ताकि संपत्तियों का मूल्यांकन अधिक यथार्थपरक एवं पारदर्शी हो सके। पूर्व में प्रकाशित प्रस्तावित मूल्यांकन सूची पर प्राप्त सुझावों एवं आपत्तियों का परीक्षण किया गया है तथा आवश्यक संशोधन किए गए हैं। अब संशोधित मूल्यांकन सूची को 15 सितंबर, 2026 से लागू किया जाना प्रस्तावित है। जनसामान्य के निरीक्षण हेतु संबंधित उपनिबंधक एवं तहसीलदार कार्यालयों में उपलब्ध करा दी गई है। जिलाधिकारी ने आमजन, जनप्रतिनिधियों एवं अन्य संबंधित हितधारकों से अपील की है कि वे अपने क्षेत्र की मूल्यांकन सूची का अवलोकन करें। यदि किसी संपत्ति अथवा क्षेत्र के निर्धारित मूल्य के संबंध में कोई सुझाव या आपत्ति हो, तो उसे 07 सितंबर, 2026 तक संबंधित उपनिबंधक अथवा तहसीलदार कार्यालय में लिखित रूप में उपलब्ध करा सकते हैं। प्राप्त सुझावों एवं आपत्तियों का नियमानुसार परीक्षण कर आवश्यक संशोधन किए जाएंगे। इसके उपरांत अंतिम मूल्यांकन सूची 15 सितंबर, 2026 से प्रभावी की जाएगी।

निखरेगी आस्था, संवरेंगे विद्यालय और रोशन होंगे गांव,अति प्राचीन अमिला माता मंदिर का होगा भव्य कायाकल्प, श्रद्धालुओं के लिए विकसित होंगी सुविधाएं

बैजनाथ, पिंडारी, चकरिया व गढ़ांव में सोलर स्ट्रीट लाइट की सौगात; तीन सरकारी विद्यालयों का भी बदलेगा स्वरूप,सीएसआर मद से होंगे विकास कार्य, ग्रामीण क्षेत्र में एक साथ शिक्षा, प्रकाश और जनसुविधाओं को मिलेगी मजबूती

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद में आस्था के

केंद्रों के संरक्षण-संवर्धन के साथ शिक्षा और ग्रामीण जनसुविधाओं को बेहतर बनाने की दिशा में बड़ी पहल की गई है। लगभग 5 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से अति प्राचीन अमिला माता मंदिर का कायाकल्प, चार गांवों में सोलर स्ट्रीट लाइट तथा तीन सरकारी विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण एवं सौंदर्यीकरण कराया जाएगा। सभी कार्य ग्रीनको एनर्जी के सीएसआर मद से प्रस्तावित हैं। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने बताया कि क्षेत्र की आस्था से जुड़े अति प्राचीन अमिला माता मंदिर को उसकी धार्मिक महत्ता के अनुरूप सुविधायुक्त स्वरूप दिया जाएगा। मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के लिए पेयजल एवं विद्युत व्यवस्था सुदृढ़ की जाएगी। ठहरने के लिए गेस्ट रूम, सुगम आवागमन के लिए इंटरलॉकिंग तथा धूप एवं वर्षा से बचाव के लिए टीन शेड का निर्माण कराया जाएगा। उद्देश्य है कि मंदिर की गरिमा एवं मूल स्वरूप को बनाए रखते हुए यहां आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हों। ग्रामीण क्षेत्रों में रात्रिकालीन आवागमन को अधिक सुगम बनाने के लिए बैजनाथ, पिंडारी, चकरिया एवं गड़वा में सोलर स्ट्रीट लाइटें स्थापित की जाएंगी। गांवों की गलियों एवं प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर सौर ऊर्जा आधारित प्रकाश व्यवस्था विकसित होने से ग्रामीणों को बेहतर सुविधा मिलेगी और परंपरागत विद्युत पर निर्भरता भी कम होगी। इसी पहल के तहत बैजनाथ, पिंडारी एवं चकरिया के सरकारी विद्यालयों का भी कायाकल्प होगा। विद्यालयों की बाउंड्रीवॉल का दुरुस्तीकरण करने के साथ कक्षाओं एवं परिसर को सुसज्जित किया जाएगा। बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन तैयार करने हेतु पृथक कक्ष तथा स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित शौचालय सहित आवश्यक सुविधाओं का विकास किया जाएगा। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने कहा कि 'विकास कार्यों का वास्तविक उद्देश्य ऐसी स्थायी सुविधाएं तैयार करना है, जिनसे आमजन के जीवन में प्रत्यक्ष बदलाव दिखाई दे। आस्था के केंद्रों पर श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिलें, बच्चों को अच्छा शैक्षणिक वातावरण मिले और गांवों में मूलभूत सुविधाएं मजबूत हों।कृइसी दृष्टिकोण से इन कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है।

ग्रीनको एनर्जी के सीएसआर सहयोग से प्रस्तावित करीब 5 करोड़ रुपये के इन कार्यों के पूर्ण होने पर क्षेत्र में एक साथ आस्था, शिक्षा और ग्रामीण आधारभूत सुविधाओं को नई मजबूती मिलेगी।

छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति से वंचित विद्यार्थियों को मिला एक और अवसर,शिक्षण संस्थानों को निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार लंबित कार्यवाही पूर्ण करने के निर्देश

आवेदन में त्रुटि सुधार 16 से 18 सितम्बर तक, पात्र डाटा 19 सितम्बर तक होगा अग्रसारित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। वित्तीय वर्ष 2025-26 से आवेदन रिजेक्ट होने तथा अन्य कारणों से जिन विद्यार्थियों 16 से 18 सितम्बर 2026 तक शिक्षण संस्थान स्तर से त्रुटिपूर्ण

में विभिन्न कारणों से दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति का लाभ प्राप्त न कर सके विद्यार्थियों के लिए शासन द्वारा पुनः समय-सारिणी निर्धारित की गई है। इसके तहत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामान्य वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक वर्ग के पात्र एवं वंचित विद्यार्थियों से संबंधित लंबित प्रक्रिया निर्धारित तिथियों में पूर्ण की जाएगी। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी ने बताया कि शिक्षण संस्थाओं से आवेदन अग्रसारित न होने, पीएफएमएस को वित्तीय वर्ष 2025-26 की छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति का भुगतान नहीं हो सका है, उनके प्रकरणों के निस्तारण के लिए समय-सारिणी जारी की गई है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार शिक्षण संस्थानों द्वारा 01 से 07 सितम्बर 2026 तक मास्टर डाटा तैयार किया जाएगा। विश्वविद्यालय/एफिलियेटिंग एजेंसी द्वारा 02 से 08 सितम्बर तक फीस आदि का सत्यापन तथा 03 से 10 सितम्बर तक रिजल्ट अपडेट करने की कार्यवाही की जाएगी। इसी प्रकार आवेदनों को सही किया जाएगा। इसके बाद शिक्षण संस्थानों द्वारा सत्यापित एवं पात्र विद्यार्थियों का डाटा 17 से 19 सितम्बर 2026 तक अग्रसारित किया जाएगा। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी ने संबंधित शिक्षण संस्थानों को निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार आवश्यक कार्यवाही समय से पूर्ण करने को कहा है, ताकि पात्र एवं वंचित विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति से संबंधित प्रक्रिया समयबद्ध रूप से पूरी की जा सके।

लगातार बारिश से बढ़ा नदियों का जलस्तर, जिला प्रशासन अलर्ट,रिहंद बांध का एक गेट खुला, दूसरा खोलने की प्रक्रिया जारी; ओबरा बांध के तीन गेट 9 फीट तक खोला गया,तटीय और निचले इलाकों में विशेष सतर्कता, नदी-नालों से दूर रहने की अपील

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद में लगातार हो रही बारिश के कारण बांधों, नदियों और पहाड़ी जलधाराओं में बढ़ते जलस्तर को देखते हुए जिला प्रशासन ने सतर्कता बढ़ा दी है। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने संबंधित अधिकारियों को बांधों एवं नदियों के जलस्तर पर लगातार नजर रखने तथा तटीय और निचले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को समय रहते सतर्क करने के निर्देश दिए हैं। वर्तमान स्थिति में रिहंद बांध का एक गेट खोला जा चुका है, जबकि दूसरा गेट खोलने की प्रक्रिया जारी है। इसके बाद ओबरा बांध के तीन गेट 9 फीट तक खोला गया। इससे नदियों के जलस्तर और बहाव में वृद्धि होने की संभावना है। इसे देखते हुए नदी तटीय क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरती जा रही है। संभावित बढ़े जलप्रवाह को लेकर प्रशासन की टीमें क्षेत्र में लोगों को लगातार जागरूक कर रही हैं। चकाड़ी में थाना प्रभारी ने स्थानीय नागरिकों के बीच पहुंचकर स्थिति की जानकारी दी और नदी तट, निचले इलाकों तथा तेज बहाव वाले स्थानों से सुरक्षित दूरी बनाए रखने की अपील की। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने कहा कि सोनभद्र की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए लगातार बारिश के दौरान पहाड़ी नालों और बरसाती जलधाराओं में अचानक पानी बढ़ सकता है।

ऐसे में लोग किसी भी उफनते नाले, नदी अथवा तेज बहाव वाले रास्ते को पार करने का प्रयास न करें। बच्चों और पशुओं को भी नदी-नालों के आसपास न जाने दें।

उन्होंने कहा कि जनपदवासियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। जिला प्रशासन द्वारा स्थिति की सतत निगरानी की जा रही है और संबंधित विभागों को पूरी सतर्कता के साथ आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। जिलाधिकारी ने नागरिकों से अपील की कि वे अफवाहों से बचें, केवल प्रशासन द्वारा जारी आधिकारिक सूचनाओं पर भरोसा करें तथा नदी-नालों और जलप्रवाह वाले क्षेत्रों से सुरक्षित दूरी बनाए रखें।

लगातार बारिश के दृष्टिगत सभी जनपदवासी विशेष सावधानी बरतें।

नदी-नालों और तेज जलप्रवाह वाले क्षेत्रों से दूर रहें। सतर्कता और सावधानी ही सुरक्षा का सबसे प्रभावी उपाय है।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

स्पोर्ट्स

सुनील छेत्री बोले-ब्राजील, उरुग्वे से खेलने पर जलन होती है,20 साल में मुझे ऐसा मौका नहीं मिला; 3 अक्टूबर को भारत-ब्राजील मैच

स्पोर्ट डेस्क। पूर्व भारतीय कप्तान सुनील छेत्री ने ब्राजील

और उरुग्वे के खिलाफ भारत के मुकाबलों पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि मौजूदा टीम को इन बड़ी टीमों के खिलाफ खेलते देखकर उन्हें थोड़ी जलन होती है। शनिवार को छेत्री ने ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन के हवाले से कहा कि करीब 20 साल के इंटरनेशनल करियर में उन्हें ब्राजील जैसी टीम के खिलाफ खेलने का मौका नहीं मिला। भारत और ब्राजील के बीच फ्रेंडली मैच 3 अक्टूबर को कोलकाता के साल्ट लेक स्टेडियम में खेला जाएगा। इसके बाद 6 अक्टूबर को इसी मैदान पर उरुग्वे से मुकाबला होगा। वहीं, सितंबर में भारत का पनामा से भी खेलने का कार्यक्रम है। हालांकि, इसकी तारीख अभी तय नहीं हुई है। वापसी के सवाल पर बोले- अब ठीक से दौड़ भी नहीं पाता-जब छेत्री से पूछा गया कि क्या वे भविष्य में फिर भारत की जर्सी में नजर आ सकते हैं, तो उन्होंने मजाकिया अंदाज में जवाब दिया। उन्होंने कहा, मैं करीब 42 साल का हूं। अब ठीक से दौड़ भी नहीं पाता और संघर्ष कर रहा हूं। ब्राजील ढाका में कैंप लगाएगी-मैच से पहले ब्राजील की टीम के ढाका में ट्रेनिंग कैंप लगाने की संभावना है। ब्राजील फुटबॉल कन्फेडरेशन का पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल 23 अगस्त को ढाका का दौरा कर चुका है। उसने नेशनल स्टेडियम और बशुंधरा किंग्स एरिना समेत कई जगहों का निरीक्षण किया। बांग्लादेश फुटबॉल फेडरेशन के मुताबिक, ब्राजील के प्रतिनिधियों को वहां की पिच ठीक लगी। हालांकि, ड्रेसिंग रूम और सुरक्षा व्यवस्था में कुछ सुधार की जरूरत बताई गई है। कैप वर्डे से भी मैच की तैयारी-अक्टूबर की विंडो में भारत का एक और मुकाबला हो सकता है। एआईएफएफ केप वर्डे के खिलाफ फ्रेंडली कराने के लिए बातचीत कर रहा है। यह मैच कोलकाता या कोच्चि के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में खेला जा सकता है। हालांकि, मुकाबले की अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। केप वर्डे ने 2026 फुटबॉल वर्ल्ड कप में पहली बार हिस्सा लिया था। टीम ग्रुप स्टेज से आगे बढ़ी और राउंड ऑफ-32 में अर्जेंटीना से 3-2 से हारकर बाहर हुई। ब्राजील के कारण एशियन कप से हटना पड़ा-भारत को जून में होने वाले पहले फीफा एशियन कप में खेलने का न्योता मिला था। टूर्नामेंट में भारत को मेजबान इंडोनेशिया, सिंगापुर और मलेशिया के साथ ग्रुप में रखा गया था।इसके बाद एआईएफएफ ने ब्राजील के खिलाफ मुकाबले का ऐलान किया। दोनों प्रतियोगिताओं के शेड्यूल में टकराव के कारण भारत ने आसान कप से हटने का फैसला किया। सुनील छेत्री, भारतीय फुटबॉल के 'कैप्टन फैंटास्टिक'- सुनील छेत्री भारतीय फुटबॉल के सबसे बड़े खिलाड़ियों में गिने जाते हैं। 3 अगस्त 1984 को सिकंदराबाद में जन्मे छेत्री ने 2002 में मोहन बागान से अपने क्लब करियर की शुरुआत की। इसके बाद वे जेसीटी, स्पोर्टिंग सीपी की रिजर्व टीम और मेजर लीग सॉकर की कैनसस सिटी विजड्र्स के लिए भी खेले। बाद में बेंगलुरु एफसी से जुड़कर वे क्लब के सबसे अहम खिलाड़ियों में शामिल हुए और कई घरेलू खिताब जीते। पाकिस्तान के खिलाफ डेब्यू किया-छेत्री ने 12 जून 2005 को पाकिस्तान के खिलाफ भारत के लिए इंटरनेशनल डेब्यू किया और उसी मैच में अपना पहला गोल किया। उनकी कप्तानी में भारत ने एसएएफएफ चैंपियनशिप, नेहरू कप और 2008 एएफसी चैलेंज कप जैसे खिताब जीते। उनके शानदार प्रदर्शन और नेतृत्व के कारण उन्हें 'कैप्टन फैंटास्टिक' के नाम से भी जाना जाता है। छेत्री के 157 इंटरनेशनल मैचों में 95 गोल-सुनील छेत्री ने भारत के लिए 157 इंटरनेशनल मैचों में 95 गोल किए हैं। इस प्रदर्शन के साथ वे इंटरनेशनल पुरुष फुटबॉल के इतिहास में चौथे सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी हैं। 2011 में अर्जुन अवॉर्ड जीता-छेत्री को 2011 में अर्जुन अवॉर्ड, 2019 में पद्मश्री और 2021 में मेजर ध्यानचंद खेल रत्न से सम्मानित किया गया। फीफा ने 2022 में उनके करियर और भारतीय फुटबॉल पर प्रभाव पर 'कैप्टन फैंटास्टिक' नाम से डॉक्यूमेंट्री भी बनाई।

लाबुशेन ऑस्ट्रेलिया की वनडे टीम से बाहर,जिम्बाब्वे-साउथ अफ्रीका सीरीज के लिए नहीं चुने गए, जोएल डेविस को मौका, स्टार्क-कमिंस की वापसी

स्पोर्ट डेस्क। ऑस्ट्रेलिया ने जिम्बाब्वे और साउथ अफ्रीका

दौरे के लिए 17 सदस्यीय टीम घोषित कर दी है। खराब फॉर्म से जूझ रहे मार्नस लाबुशेन को टीम में जगह नहीं मिली है। वहीं जोएल डेविस पहली बार वनडे टीम में चुने गए हैं। मिचेल मार्श और ट्रैविस हेड की वापसी हुई है, जबकि पैट कमिंस और मिचेल स्टार्क्स साउथ अफ्रीका के खिलाफ वनडे सीरीज में टीम से जुड़ेंगे। लाबुशेन ने 2023 वनडे वर्ल्ड कप फाइनल में अर्धशतक लगाया- लाबुशेन लंबे समय से ऑस्ट्रेलिया की वनडे टीम का हिस्सा रहे हैं। उन्होंने 2023 वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल में भारत के खिलाफ नाबाद अर्धशतक लगाकर टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। हालांकि, मौजूदा फॉर्म को देखते हुए उन्हें इस दौरे के लिए टीम में शामिल नहीं किया गया है। लाबुशेन ने पिछली 18 वनडे पारियों में 21.87 की औसत से रन बनाए हैं। जोएल डेविस को पहली बार वनडे टीम में जगह- ऑलराउंडर जोएल डेविस को पहली बार ऑस्ट्रेलिया की वनडे टीम में चुना गया है। उन्होंने जून में बांग्लादेश के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के लिए इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया था। युवा ओली पीक भी टीम में अपनी जगह बनाए रखने में सफल रहे हैं। कूपर कोनोली को भी टीम में बरकरार रखा गया है। सिलेक्टर जॉर्ज बेली ने कहा कि जिम्बाब्वे और साउथ अफ्रीका में होने वाली छह मैचों की सीरीज अगले साल के वर्ल्ड कप की तैयारी के लिहाज से महत्वपूर्ण है। 2027 का वनडे वर्ल्ड कप साउथ अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया में खेला जाना है। जिम्बाब्वे में मार्श, साउथ अफ्रीका में कमिंस-जिम्बाब्वे के खिलाफ तीन वनडे मैचों में मार्श टीम की कप्तानी करेंगे। रेगुलर कप्तान पैट कमिंस साउथ अफ्रीका सीरीज में टीम से जुड़ेंगे। हालांकि कमिंस ने संकेत दिया है कि वे साउथ अफ्रीका के सभी तीन वनडे नहीं खेलेंगे, ऐसे में मार्श फिर कप्तानी की जिम्मेदारी संभाल सकते हैं। स्टार्क्स भी साउथ अफ्रीका सीरीज में वनडे टीम में वापसी करेंगे। जोश हेजलवुड दोनों सीरीज के लिए टीम में हैं। स्पेंसर जॉनसन भी एक साल से ज्यादा समय बाद वनडे क्रिकेट में वापसी करेंगे, जबकि बिली स्टेनलेक को भी तेज गेंदबाजी आक्रमण में शामिल किया गया है।

15 सितंबर से जिम्बाब्वे में सीरीज-ऑस्ट्रेलिया और जिम्बाब्वे के बीच तीन वनडे 15, 18 और 20 सितंबर को हरारे में खेले जाएंगे। इसके बाद साउथ अफ्रीका में 24 सितंबर को डरबन, 27 सितंबर को जोहान्सबर्ग और 30 सितंबर को पोटचेफस्ट्रूम में तीन वनडे होंगे। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया को साउथ अफ्रीका के खिलाफ तीन टेस्ट मैच खेलने हैं। पहला टेस्ट 9 अक्टूबर से डरबन में शुरू होगा।

ऑस्ट्रेलिया की वनडे टीम- जैवियर बार्टलेट, एलेक्स कैरी, कूपर कोनोली, पैट कमिंस (साउथ अफ्रीका सीरीज), जोएल डेविस, नाथन एलिस, कैमरन ग्रीन, जोश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जोश इंग्लिस, स्पेंसर जॉनसन, मिचेल मार्श, ओली पीक, मैथ्यू रेनशॉ, बिली स्टेनलेक, मिचेल स्टार्क (साउथ अफ्रीका सीरीज), एडम जम्पा।

मेसी ने इंटरनेशनल फुटबॉल से संन्यास लिया,इंस्टाग्राम पर इमोशनल पोस्ट की, लिखा- यह फैसला बेहद मुश्किल और दर्दनाक

स्पोर्ट डेस्क। स्टार फुटबॉलर लियोनेल मेसी ने

इंटरनेशनल फुटबॉल को अलविदा कह दिया है। उन्होंने सोमवार को सोशल मीडिया पर हाथ से लिखे नोट की तस्वीर के साथ संन्यास का ऐलान किया। 39 साल के मेसी ने बताया कि फाइनल के 2 दिन बाद 21 जुलाई को ही उन्होंने संन्यास का फैसला लिख लिया था। उनका आखिरी मैच वर्ल्ड कप फाइनल था, जिसमें अर्जेंटीना को स्पेन से हार मिली थी। मेसी ने लिखा कि उनके पिता जॉर्ज मेसी की मौत के बाद उन्हें लगा कि अर्जेंटीना के लिए करियर खत्म करने का यही सही समय है।' जॉर्ज मेसी का 8 अगस्त को सेंट्रल अर्जेंटीना के रोसारियो शहर के एक अस्पताल में निधन हुआ था। वे 68 साल के थे। मेसी ने पोस्ट में क्या लिखा- मेसी ने लिखा, 'यह फैसला लेना तकलीफदेह था और आज भी दिल के अंदर तक दुख देता है, लेकिन मैं समझता हूं कि अब समय आ गया है। मैंने हमेशा अपना सब कुछ दिया है। सिर्फ उन पिछले कुछ सालों में नहीं, जब हमने सब कुछ जीता, बल्कि उससे पहले भी।' मैंने इस जर्सी के लिए हमेशा संघर्ष किया। मैदान पर अपना सब कुछ छोड़ा, ताकि आपको खुशी दे सकूं। फुटबॉल के जरिए आपको अर्जेंटीनियन होने पर गर्व महसूस करा सकूं। समय कम बचा है और अध्याय खत्म होते हैं। यह भी ऐसा ही एक अध्याय है, जो मुझे बहुत दुख देता है। मुझे राष्ट्रीय टीम का हिस्सा बनना पसंद था, पसंद है और हमेशा रहेगा। मैंने अपने पास मौजूद सब कुछ दे दिया है। अब मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं हैं, जो यहां होने के हकदार हैं। पिता के निधन के बाद कहा था- ज्यादा नहीं खेल पाऊंगा-मेसी ने अपने पिता की मौत के बाद एक पोस्ट में लिखा था कि उन्हें इस बात को लेकर 'काफी संदेह' था कि वे ज्यादा समय तक अर्जेंटीना के लिए खेल पाएंगे या नहीं। उन्होंने स्पेन के खिलाफ वर्ल्ड कप फाइनल में अपने प्रदर्शन को लेकर भी लिखा था, 'मेरे पैर अब आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। इस बार मैंने अपनी शारीरिक सीमाओं से आगे जाने की कोशिश की, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका।'फैंस और साथियों को शुक्रिया कहा-मेसी ने अर्जेंटीना के फैंस को पिछले 20 साल के प्यार के लिए शुक्रिया कहा। उन्होंने लिखा, 'मुझे मैदान से आपकी आवाज सुनना बहुत याद आएगा। अब मैं आप ही में से एक रहूंगा और बाहर से टीम का समर्थन करूंगा, अच्छे समय में भी और बुरे समय में भी, खासकर बुरे समय में।' मेसी ने अपने परिवार को साथ देने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि यह सफर बहुत खूबसूरत और मुश्किल रहा। मेसी ने हर कोच, साथी खिलाड़ी और अधिकारी को भी धन्यवाद दिया, जिनके साथ उन्होंने यह सफर तय किया। उन्होंने लिखा कि वे अपने साथ कभी न भूलने वाली यादें और पल लेकर जा रहे हैं।

मेसी ने कहा, 'मैं इस शांति और गर्व के साथ जा रहा हूं कि मैंने अपने साथियों के साथ मिलकर आपको वे पल दिए, जिनका हमने कभी सिर्फ सपना देखा था।

आप सभी के साथ यह अनुभव जीना शानदार रहा। मैं आपसे प्यार करता हूं।' उन्होंने अंत में लिखा, 'मुझे अर्जेंटीनियन बनाने के लिए धन्यवाद, भगवान! लेट्स गो, अर्जेंटीना!'

अर्जेंटीना को 2022 में फुटबॉल वर्ल्ड कप जिताया-मेसी अपने देश के सबसे ज्यादा गोल करने वाले और सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले खिलाड़ी हैं। उन्होंने 2005 में अर्जेंटीना के लिए डेब्यू किया था। वे टीम के लिए 6 वर्ल्ड कप खेले चुके हैं।

मेसी ने 2022 में कतर में अर्जेंटीना को वर्ल्ड कप जिताया। अर्जेंटीना तीसरा वर्ल्ड कप जीता था और 36 साल का सूखा खत्म किया। मेसी ने 2021 कोपा अमेरिका जीतकर अर्जेंटीना का 28 साल का ट्रॉफी सूखा भी खत्म किया था।

मानसून में बढ़ते सांप काटने के केस,सांप काटे तो तुरंत करें ये 6 काम, ये 10 गलतियां न करें

जयपुर। पिछले दिनों महाराष्ट्र पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट ने सांप के काटने (स्नेक बाइट) को 'नोटिफाएबल डिजीज' घोषित किया। यानी अब स्वास्थ्य विभाग को स्नेक बाइट के मामलों और इससे होने वाली मौतों की जानकारी देना अनिवार्य होगा। भारत में हर साल लाखों लोग सर्पदंश का शिकार होते हैं। मानसून के दौरान ये मामले और बढ़ जाते हैं। भारत सरकार के आंकड़ों के मुताबिक, देश में सालाना 30 से 40 लाख स्नेक बाइट के मामले सामने आते हैं। इनमें 50 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो जाती है। दुनिया भर में सर्पदंश से होने वाली कुल मौतों में आधे से ज्यादा मौत अकेले भारत में होती है। चिंता की बात यह है कि हर 10 में से केवल 3 पीड़ित ही अस्पताल तक पहुंच पाते हैं। इसलिए स्नेक बाइट की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- सांप काटने पर कौन-से लक्षण दिखते हैं? सांप काटने पर तुरंत क्या करना चाहिए? स्नेक बाइट से बचाव के लिए क्या सावधानियां बरतनी चाहिए? और विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. अजय नायर, सीनियर कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, नारायणा हॉस्पिटल, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मानसून में स्नेक बाइट के मामले क्यों बढ़ जाते हैं? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- बारिश में सांप के बिलों में पानी भर जाता है। इससे वे बाहर निकल आते हैं। सूखी और सुरक्षित जगह की तलाश में सांप घरों, खेतों और गोदामों तक पहुंच जाते हैं। मानसून में खेती-बाड़ी का काम बढ़ने से लोगों का खेतों में आना-जाना ज्यादा होता है।इस दौरान घास और झाड़ियां घनी हो जाती हैं, जिनमें सांप आसानी से छिप जाते हैं। बारिश में चूहे और मेढक ज्यादा सक्रिय हो जाते हैं। ऐसे में शिकार की तलाश में सांप इंसानी बस्तियों में पहुंच जाते हैं। कई बार गलती से लोगों का पैर सांप पर पड़ जाता है। बारिश में सांपों के बिलों या छिपने वाली जगहों में पानी भर जाता है। इसलिए सूखी और सुरक्षित जगह की तलाश में सांप बाहर निकल आते हैं। इसलिए इस मौसम में स्नेक बाइट की घटनाएं बढ़ जाती हैं। सवाल- सांप काटने पर क्या लक्षण दिखते हैं? कब तुरंत हॉस्पिटल ले जाना जरूरी होता है? जवाब- स्नेकबाइट के लक्षण इस बात पर निर्भर करते हैं कि सांप जहरीला था या नहीं। लेकिन कुछ संकेत ऐसे होते हैं, जिनमें तुरंत हॉस्पिटल ले जाना बेहद जरूरी है। सवाल- अगर सांप काट ले तो सबसे पहले क्या करना चाहिए? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- 1. मरीज को शांत, स्थिर रखें- घबराहट से हार्ट-बीट बढ़ती है और जहर तेजी से फैलता है। मरीज को भरोसा दिलाएं और आराम से सांस लेने को कहें। 2. चलने-फिरने न दें-पेशेंट को तुरंत

बैठाएं या सीधा लिटाएं। बाइट वाले अंग को कम-से-कम हिलने दें। 3. हाथ या पैर को सहारा दें-हाथ या पैर को आराम की स्थिति में रखें। जरूरत हो तो लकड़ी या किसी सख्त चीज का सपोर्ट दें। 4. कसे हुए कपड़े-सामान हटा दें-अंगूठी, चूड़ी, कड़ा, जूते आदि तुरंत निकाल दें। सूजन बढ़ने पर ये चीजें ब्लड फ्लो रोक सकती हैं। 5. तुरंत अस्पताल ले जाएं-एंटी-वेनम इंजेक्शन ही सांप के जहर का मुख्य इलाज है। इलाज में देरी से हालत गंभीर हो सकती है। सांप काटने पर फर्स्ट एड:- मरीज को शांत रखें। उसे तुरंत बिठाएं या लिटाएं। तुरंत अस्पताल लेकर जाएं। बिल्कुल मूवमेंट न करने दें। अंगूठी, चूड़ी, कड़ा वगैरह निकाल दें। बाइट वाले अंग को स्थिर रखें। सवाल- सांप काटने पर डॉक्टर क्या ट्रीटमेंट देते हैं? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- पेशेंट को तुरंत हॉस्पिटल में भर्ती किया जाता है। उसकी सांस, हार्ट बीट और ब्लड प्रेशर चेक किया जाता है। डॉक्टर यह पता लगाते हैं कि जहर का असर कितना हुआ है। जरूरत पर 'एंटी-स्नेक वेनम' (एएसवी) इंजेक्शन देते हैं। दर्द, सूजन, उल्टी जैसी समस्याओं के लिए अलग-अलग दवाइयां देते हैं। सांस लेने में दिक्कत होने पर ऑक्सीजन सपोर्ट देते हैं। लगाने और इलाज में मदद मिलती है। सवाल- सांप काटने पर किस अस्पताल में जाना चाहिए? जवाब- ऐसे अस्पताल ले जाएं, जहां इमरजेंसी, आईसीयू, ऑक्सीजन और एंटी स्नेक वेनम उपलब्ध हो। लक्षण गंभीर हों तो बड़े ट्रॉमा सेंटर या मल्टीस्पेशियलिटी अस्पताल जाएं। अस्पताल दूर हो तो पहले नजदीकी PHC/CHC पहुंचें। सवाल- सांप काटने पर कौन-सी गलतियां नहीं करनी चाहिए? जवाब- इस दौरान की गई गलतियों से हालत बिगड़ सकती है। इसलिए इलाज में देरी करने या घरेलू उपाय अपनाने से बचें। याद रखें, स्नेक बाइट का सही इलाज अस्पताल में ही संभव है। सांप काटने पर न करें ये गलतियां:- रस्सी/टूर्निकेट न बांधें। मिट्टी या कोई लेप न लगाएं। घाव को काटें नहीं। बर्फ, एंटीसेप्टिक न लगाएं। जहर को चूसें नहीं। मरीज को चलने- दौड़ने न दें। खुद से एंटी-वेनम न लगाएं। झाड़-फूंक न करें। घरेलू नुस्खे न आजमाएं। बिना डॉक्टरी सलाह दवा न दें। सवाल- बारिश के मौसम में किन जगहों पर सांप ज्यादा निकलते हैं? जवाब- ऐसी जगहों पर सांप ज्यादा निकलते हैं- खेत, घास और झाड़ियां। पानी भरे इलाके, नालों और तालाबों के पास। लकड़ी, ईंट, पत्थर या कबाड़ के ढेर के पास। अनाज गोदाम और चूहों वाली जगहें। पुराने जूते, कपड़ों या सामान के ढेर। घरों के आसपास की दरारें और अंधेरी जगहें। गांवों में कच्चे घर, पशुशाला और भूसे के ढेर। क्या करें? बच्चों को तुरंत दूर करें। सांप से सुरक्षित दूरी बनाएं। नजर रखें, पर पास न जाएं। कमरे का दरवाजा बंद कर दें। बाहर निकलने का रास्ता छोड़ें। स्नेक रेस्क्यूअर को बुलाएं। रात में टॉर्च का इस्तेमाल करें। पालतू जानवरों को सेफ रखें। क्या न करें? सांप पकड़ने की कोशिश न करें। सांप को छूने- मारने न जाएं। डंडा, पत्थर या आग से हमला न करें। केरोसिन या केमिकल न डालें। धुआं से भगाने की कोशिश न करें। फोटो या वीडियो न बनाएं। ये न मानें कि सांप मर चुका है। घबराकर भीड़ इकट्ठा न करें। सवाल- मानसून में घर के अंदर सांप-बिच्छू आने से कैसे रोकें? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- घर के आसपास की घास-झाड़ियां साफ रखें। कबाड़, लकड़ी और ईंटों का ढेर न लगाएं। दीवारों, दरवाजों और पाइपों के आसपास की दरारें बंद करें। घर में चूहे न आने दें। दरवाजों के नीचे गैप स्टॉपर लगाएं। घर के आसपास पानी जमा न होने दें। किचन और स्टोर रूम साफ व सूखे रखें। सांप या बिच्छू दिखे तो दूरी बनाए रखें और रेस्क्यू टीम को सूचना दें। सवाल- क्या कोई ऐसा तरीका है, जिससे जहरीले और गैर-जहरीले सांप में फर्क पता चल सके? जवाब- नहीं, आम लोगों के लिए सिर्फ देखकर यह तय करना मुश्किल होता है कि सांप जहरीला है या नहीं। सिर का आकार, रंग, आंखों की पुतली या शरीर के निशान जैसे पारंपरिक तरीके हमेशा सही नहीं होते। एक ही प्रजाति के सांपों का रंग और आकार भी अलग-अलग हो सकता है। सवाल- अगर जंगल या खेतों के पास रहते हैं तो सांपों से बचाव के लिए क्या सावधानियां बरतनी चाहिए? जवाब- जंगल, खेत या ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों को खास सावधानी बरतनी चाहिए। इसके लिए- खेत, घर और रास्तों के आसपास की घास-झाड़ियां साफ रखें। रात में बाहर निकलें तो टॉर्च और जूते का इस्तेमाल करें। किसी बिल, पत्थर, लकड़ी या भूसे के ढेर में हाथ न डालें। फर्श पर सीधे सोने से बचें और मच्छरदानी का इस्तेमाल करें। जूते और कपड़े पहनने से पहले उन्हें झाड़कर देख लें। स्नेक बाइट से जुड़े जरूरी सवाल-जवाब-सवाल- घर में मौजूद कौन-सी चीजें सांपों को आकर्षित करती हैं? इनका फेवरेट प्लेस क्या है? जवाब- चूहे, छिपकलियां और मेढक सांपों को आकर्षित करते हैं।

वर्ल्ड रेसलिंग एंटरटेनमेंट में तीन रेसलर्स पर हमला,उसोज और सिकोआ घायल- खून से सने विजुअल्स को ब्लर किए गए

स्पोर्ट डेस्क। डब्लूडब्लूई के मंडे नाइट रॉ के हालिया एपिसोड में द उसोज, जिमी उसो और सोलो सिकोआ पर जानलेवा हमला किया गया। इसके बाद उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। शो के कमेंटेटर जो टेसिटोर ने इसकी जानकारी दी। हमले के वीडियो में इतना खून-खराबा था कि टीवी स्क्रीन पर विजुअल्स को ब्लर किया गया। फुटेज को फ्रीज करके सेंसर भी करना पड़ा। द उसोज पर कार के पास हमला:- रॉयस कीज और ओटीएम ने रॉ की शुरुआत में द उसोज, जिमी उसो पर हमला कर दिया।हमलावरों ने जिमी को कार के ऊपर पटक दिया। इसके बाद जे उसो को भी बुरी तरह पीटा गया। जे का चेहरा खून से लथपथ नजर आया, जिसके कारण डब्लूडब्लूई ने टीवी पर उस हिस्से को ब्लर कर दिया। हमले के दौरान जैकब फाटू वहां पहुंचे और हमलावरों का पीछा करने की कोशिश की। हालांकि, रॉयस कीज और ओटीएम वहां से निकल गए। इस हमले ने रॉयस कीज और ओटीएम को डब्लूडब्लूई में एक बड़े खतरे के तौर पर स्थापित कर दिया है। सोलो सिकोआ पर बैकस्टेज हमला-सोलो सिकोआ को बैकस्टेज निशाना बनाया गया। इसके बाद वह घायल हालत में पड़े मिले। इस हमले के लिए रोमन रेंस का नाम सामने आया, लेकिन रेंस ने इसमें अपना हाथ होने से इनकार किया। रेंस ने एलए नाइट का नाम भी इस मामले में नहीं जोड़ने की बात कही। तीनों को मेडिकल सेंटर ले जाया गया-जो टेसिटोर ने बताया कि रॉ में हुई घटना के बाद कई स्टार्स को अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने कहा कि सोलो सिकोआ, जे उसो और जिमी उसो को स्थानीय मेडिकल सेंटर पहुंचाया गया है। उन्होंने बताया कि डॉक्टर इन तीनों की चोटों का आकलन कर रहे हैं। जो टेसिटोर ने कहा,'हमें अभी इस बात की जानकारी मिली है, जो हम आपके साथ साझा कर रहे हैं।

बच्चो को सिर्फ जरुरत का सामान ही नहीं समय देना भी आवश्यक

7 साल की समायरा मुम्बई के चेम्बूर में एक बड़े रिटेल स्टोर की शेल्फ के बीच में खड़ी थी। उसने अपनी मां अमृता से पूछा, 'मम्मी मुझे ये मिठाई चाहिए'। अमृता ने इधर-उधर देखा और पाया कि वहां समायरा के कद का एक और बच्चा पहले से मिठाई खा रहा था और इसीलिए उसकी बच्ची ने भी उसी मिठाई की मांग की। वह जानती थी कि इस उम्र में यह स्वाभाविक है कि बच्चों को वो सब चाहिए, जो साथियों के पास है।अमृता ने ग्रोसरी शेल्फ की ओर देखना बंद किया, हालांकि उसे पता था कि वह लेट हो रही थी और उसे सिर्फ दो और चीजें ही लेनी थी और घर जाना था क्योंकि मेहमान लंच पर आने वाले थे। लेकिन अपनी बेटी की मांग पर सख्ती से 'ना' कहने या उसकी मांग के आगे झुक जाने के बजाय उसने अपने काम को रोकने और बेटी से बात करने का फैसला किया।वह थोड़ा झुकी और समायरा की आंखों में आंखें डालकर बोली 'बताओ बच्चा' (सख्त स्वर में), ईमानदारी से बताओ (करुण स्वर में) तुम्हें इस मिठाई की जरूरत है (सामान्य स्वर में) या...तुम बस इसे लेना चाहती हो? (जिज्ञासु स्वर में, जैसे मां को जवाब पता नहीं)।' समायरा शर्माती सी उसके कंधे पर टिक गई, और धीमे स्वर में दूसरे बच्चे की ओर अंगुली करते हुए बोली 'उसके पास ऐसी मिठाई हैं'।अब इस मोलभाव में मां का पक्ष मजबूत था। अमृता ने कहा, 'कोई बात नहीं, तुम्हें खाने के लिए मिठाई चाहिए। हमारे फ्रिज में रखीं हैं। हम घर जा रहे हैं, यदि तब भी तुम्हें लगे कि ये खानी है, तुम हमेशा ले सकती हो। पर सिर्फ इसलिए

कि किसी दूसरे के पास यह है, इसका मतलब यह नहीं कि हमारे पास भी वही होनी चाहिए।'स्टोर में कोई नहीं जानता कि समायरा इन गहरे शब्दों को समझ पाई या नहीं, लेकिन दूसरे बच्चे की मां अमृता के पास आई और उसकी तारीफ की। अमृता ने जल्दी से वो चीजें ली, जो वो चाहती थी और समायरा भी एक मेमने की तरह मां के पीछे खुशी-खुशी, नाचती हुई चलती दिख रही थी।समायरा के पिता समीर और मां अमृता से ही उसे अपना नाम मिला। दोनों ही बैंकर हैं और ऊंचे पद पर हैं और मुम्बई की सबसे पॉश कॉलोनी में रहते हैं, इसलिए उनके लिए अफॉर्डेबिलिटी कभी कोई मसला नहीं रहा। फिर भी समायरा को वह सब कुछ नहीं मिलता, जो वह चाहती है।यही उनकी परवरिश की खूबसूरती है। दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली समायरा के दादा-दादी ने इस रविवार को मुझे और मेरी पत्नी को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया। इसी कारण मैं इस वाकिये के बारे में जान पाया।अमृता ने कहा,'माता-पिता बच्चों के सुखद बचपन के निर्माण के लिए नियमित प्रयास करते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि बढ़ते बच्चों की जरूरतों का ध्यान रखा जाए और वो सबकुछ दिया जाए, जिसकी उन्हें जरूरत है। लेकिन ठीक उसी समय, इच्छाओं व सनक के बीच महीन रेखा होती है, और पैरेंट्स को चाहिए कि वे अपने बच्चों को इस अंतर के बारे में समझाने की जिम्मेदारी लें।जब उन्हें सब मिल जाता है तो एक समय पर वह बहुत सी चीजों के प्रति लालची हो जाते हैं। यह जरूरी है कि वे बड़े होने पर आवश्यकता और चाहत के बीच के अंतर को समझे। यह सब बताते हुए अमृता ने ये भी कहा कि मैं खुद को कभी नहीं रोकती, मैं बेटी की जरूरतें पूरी करती हूं, उसके बचपन में चमक बिखेरने वाले गिफ्ट देती हूं और उसे उनका आनंद लेने देती हूं।लेकिन सिर्फ माता-पिता ही यह जानते हैं कि कब बच्चा थोड़ा जिद्दी हो रहा है और यही वह समय होता है जब बच्चों को यह सीख देनी होती है कि 'अपनी जरूरतों को जानो'। समायरा के पैरेंट्स से बातचीत में मुझे एहसास हुआ कि वे मेरी पीढ़ी की तुलना में अधिक बेहतर माता-पिता है। उसी समय मैंने निर्णय किया कि अगली 'गुड पैरेंटिंग' सेमिनार में उन्हें बुलाया जाना चाहिए।फंडा यह है कि जरूरतों को प्राथमिकता के स्तर पर तय करने से किसी बच्चे को यह समझने में सहायता मिलती है कि उसे किस चीज की जरूरत है और कौन-सी चीज सिर्फ उसकी चाहत है। इससे उनमें एहसानमंद होने और संतोष की भावना विकसित होती है। इससे बच्चा जिम्मेदारी, मुसीबतों से पार पाने की क्षमता और कठिन परिश्रम के महत्व जैसे जीवन के मूल्यवान सबक भी सीखता है।

ग्रोथ एक आंकड़ा नहीं माइंडसेट है, जो मूंगफली की दुकान से भी आ सकती है

लक्ष्मी रोज पति के ऑफिस और बच्चों के स्कूल जाने के बाद 3 घंटे की वॉलंटियरिंग के लिए घर से निकल जाती हैं। उन्होंने

यूनिवर्सिटी की पढ़ाई तो की, पर काम का कोई अनुभव नहीं हैं। वे नियमित रूप से एक स्थानीय निजी अस्पताल की चैरिटी विंग में लगन से उन मरीजों की मदद करतीं, जो इलाज का खर्च नहीं उठा सकते थे। जरूरतमंद लोगों को कम खर्च या कई बार मुफ्त में इलाज दिलाकर उन्हें संतोष मिलता। धीरे-धीरे उनका चैरिटी का काम बढ़ा तो इलाके में उनकी पहचान बनने लगी। वे स्टाफ रखने लगीं, फंडिंग के लिए मल्टीनेशनल कंपनियों से जुड़ीं, कॉरपोरेट डोनर्स से मिलने यात्राएं करने लगीं। साथ ही अपने मूल स्थान पर चल रहा काम भी संभालती थीं। आप जानते हैं? कि वे चुपचाप क्या बना रही थीं? यह था- अपना सीवी। वे लीडरशिप, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट और स्ट्रैटेजिक टीम बिल्डिंग जैसे पेशेवर स्तर के काम कर रही थीं। यह वास्तविक अनुभव कई महंगे कॉरपोरेट ट्रेनिंग प्रोग्राम्स से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। करीब 50 हजार लोगों पर हुए ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी के अध्ययन में सामने आया कि वॉलंटियरिंग एकमात्र वर्कप्लेस इंटरवेंशन है, जो व्यक्ति की वेलबीइंग को बेहतर बनाता है और यह कर्मचारियों की मजबूत व विविध नेटवर्क बनाया था। वे प्रभावशाली लोगों को कॉल कर सकती थीं, सीधे उनके ऑफिस जा सकती थीं। लक्ष्मी की निस्वार्थ सेवा-पेशेवर रवैए के कारण वे लोग उनका सम्मान करते। इन चर्चाओं में उन्होंने परिवार की आपात स्थिति बताई और सहायता भी तत्काल मिली। न सिर्फ उनके पति को नई नौकरी मिली, बल्कि उन्हें भी उसी चैरिटी में वेतन वाली स्थायी नौकरी ऑफर हुई। आज भी ऑफिस की नौकरी के अलावा वे तीन घंटे अतिरिक्त वॉलंटियरिंग करती हैं। वॉलंटियरिंग दूसरों की मदद का तो बेहतर तरीका है ही, आज के जॉब मार्केट में ये खुद की मदद का भी सबसे अच्छा जरिया बन गया है। रिक्रूटर्स शैक्षणिक उपलब्धियों से ज्यादा प्रामाणिक कौशल को प्राथमिकता देते हैं, इसलिए वॉलंटियरिंग प्रोफाइल मजबूत बनाती हैं। बहुत-से रिक्रूटर्स मानते हैं कि वॉलंटियरिंग में अनुभवी कैंडिडेट्स ज्यादा खुश रहते हैं, इंटरव्यू को अधिक सहजता से हैंडल करते हैं। उनके अनुभव अधिक प्रामाणिक होते हैं। यूके जैसे देशों में कंपनियां वॉलंटियरिंग को बढ़ावा देती हैं, क्योंकि वे जानती हैं कि इसका कर्मचारियों के प्रदर्शन व कार्यस्थल की संतुष्टि पर सकारात्मक असर होता है।मुझसे मार्गदर्शन लेने वाले विद्यार्थियों को मैं हमेशा सलाह देता हूं कि काम यदि अत्यधिक तकनीकी भरा न हो तो सामान्य इंटर्नशिप के बजाय वॉलंटियरिंग करें। इससे नेटवर्क बनता है, अनौपचारिक माहौल में लाभार्थियों व कॉरपोरेट लीडर्स से सीधे बात का मौका मिलता है। ये उन्हें प्रोफेशनल टर्मिनोलॉजी-व्यवहारिक कामकाज सिखाती है, जिससे उनके पास इंटरव्यू में बात करने के लिए ठोस विषय होते हैं। 2005 की मुंबई बाढ़ में मदद करने वाले मेरे विद्यार्थियों को उनके साथियों से पहले नौकरी मिली। वजह सिर्फ चैरिटी नहीं थी, बल्कि उन्होंने साबित किया था कि वे परिपक्वता से आपदाओं को संभाल सकते हैं। हर सक्षम व्यक्ति, खासकर कॉलेज छात्रों को वॉलंटियरिंग जरूर करनी चाहिए। इससे आत्मसंतुष्टि मिलती है और संकट के वक्त में वे पेशेवर की तरह सहायता करना सीखते हैं। फंडा यह है कि वॉलंटियरिंग के जरिए आप स्वयं का ही सबसे मजबूत रूप तैयार करते हैं। सुनिश्चित करते हैं कि आप भविष्य की हर चुनौती के लिए तैयार हैं। ...और तब देना ही पाना भी बन जाता हैं। एन. रघुरामन

खेलों की 'सॉफ्ट पावर' को हमें गम्भीरता से लेना होगा

बंगाल के चुनाव परिणामों पर काफी बात हो चुकी है, इसलिए मैं एक दूसरे विषय पर बात करना चाहूंगा। और वो यह है कि ताजा नतीजों का इस राज्य में खेलों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? क्या चीजें बेहतर हो सकती हैं, और आगे

का रास्ता क्या हो सकता है? तथ्य यह है कि पिछले कुछ वर्षों में बंगाल में खेलों के क्षेत्र में कोई वास्तविक प्रगति नहीं हुई है। राज्य में कोई बड़े टूर्नामेंट आयोजित नहीं हुए हैं। कुछ हॉकी टर्फों को छोड़ दें तो कोई अन्य बुनियादी ढांचा विकसित नहीं हुआ है और न ही राज्य से कोई उल्लेखनीय प्रतिभा उभर कर सामने आई है। यह वहां की राजनीतिक व्यवस्था की आलोचना नहीं है, लेकिन सच्चाई यह है कि पड़ोसी राज्यों की तुलना में अंतर साफ दिखाई देता है। बिहार में खेल बजट अब चालू वर्ष के लिए 550 करोड़ रुपए से अधिक हो चुका है। ओडिशा इसे पहले ही कई वर्षों से 1000 करोड़ रुपए के पार पहुंचा चुका है। पिछले एक दशक में उसने अनेक अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों की मेजबानी की है। बिहार ने भी अब ऐसा करना शुरू कर दिया है। तेलंगाना ने भी कई रणनीतिक खेल साझेदारियां की हैं और हाल ही में उसने महिला हॉकी विश्व कप क्वालिफायर की मेजबानी भी की थी। बंगाल में भी अपार सम्भावनाएं हैं और गंभीर प्रयास किए जाएं, तो हालात बदलते दिखाई दे सकते हैं। मैं राजनीतिक ताने-बाने पर टिप्पणी करने के लिए स्वयं को योग्य नहीं मानता, लेकिन इतना मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि खेल एक बहुत बड़ा अवसर हैं। तीरंदाजी, टेबल टेनिस, फुटबॉल, निशानेबाजी, मुक्केबाजी- इन सभी खेलों का बंगाल में बड़ा भविष्य है, बशर्ते प्रतिभाओं को सही ढंग से पहचाना और संवारा जाए। और इतना मानना पर्याप्त होगा कि भाजपा इसे साबित करने के लिए हरसम्भव प्रयास करेगी। यही वह चीज है, जो खेलों के लिए अवसर पैदा करती है। भारत पहले ही 2030 राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी कर रहा है। हम 2036 ओलंपिक और 2038 एशियाई खेलों की मेजबानी के लिए भी बोली लगा रहे हैं। करेगा और राजनीतिक वर्ग को भी लाभ पहुंचाएगा, क्योंकि यह अपेक्षाकृत आसान उपलब्धि है। बड़े उद्योगों की स्थापना या रोजगार-सृजन की तरह यहां प्रभाव दिखाने में बहुत लंबा समय नहीं लगता। खेलों में आप अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की मेजबानी शुरू कीजिए, कोई 'खेलो इंडिया' आयोजन कराइए, राष्ट्रीय खेलों का आयोजन कीजिए- और अचानक पूरे राज्य के इर्द-गिर्द एक नई हलचल पैदा हो जाती है।

पश्चिम बंगाल में भी निश्चित रूप से यह क्षमता मौजूद है और पूरी सम्भावना है कि अगले एक-दो वर्षों में इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण होता हुआ हमें दिखाई दे।

शतरंज को ही लें। वर्षों से बंगाल की इस खेल में समृद्ध परम्परा रही है। हमने टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट जैसे आयोजनों को देखा है। इस खेल का एक इतिहास है। फिर अधिक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएं क्यों नहीं आयोजित की जा सकतीं? यही बात मुक्केबाजी, तीरंदाजी और टेबल टेनिस पर भी लागू होती है। नेताजी इनडोर स्टेडियम या खुदीराम अनुशीलन केंद्र में आखिरी बार कोई बड़ा खेल आयोजन कब हुआ था?

बंगाल में बड़े होते समय मैंने इन परिसरों में अनेक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएं आयोजित होते देखी थीं। लेकिन अब इन स्टेडियमों का उपयोग ज्यादातर राजनीतिक सभाओं और एक्सपो के लिए होता है। रग्बी भी ऐसा खेल है जिसमें बहुत कुछ किया जा सकता है। भारत ने चीन में हुए 2023 के एशियाई खेलों से पहले कोलकाता में महिला प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया था।

हाल के वर्षों में बंगाल ने किसी बड़े खेल आयोजन की मेजबानी नहीं की है और जब करने की कोशिश की भी- जैसे लियोनल मेसी की भारत-यात्रा के दौरान- तो वह अंततः एक तमाशे में बदल गया। भाजपा इस मुद्दे पर बेहद मुखर रही है, इसलिए अब यह उसी की जिम्मेदारी है कि वह राज्य की संभावनाओं को सामने लाए और इस क्षेत्र में ठोस काम करके दिखाए। इसका पहला संकेत तब मिलेगा, जब नए खेल मंत्री की नियुक्ति होगी और नई सरकार का पहला बजट सामने आएगा।बड़े उद्योगों की स्थापना की तरह खेलों में प्रभाव दिखाने में बहुत समय नहीं लगता। आप अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की मेजबानी शुरू कीजिए या 'खेलो इंडिया' कराइए- अचानक पूरे राज्य के इर्द-गिर्द नई हलचल पैदा हो जाती है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,बोरिया मजुमदार)

बड़ा दिल रखने के लिए पैसा नहीं, मंशा चाहिए!

'इंडिया का आखिरी होटल है। आइए, थोड़ा चाय-समोसा लीजिए, कोल्ड ड्रिंक पीजिए। अभी कार्यक्रम शुरू होने में काफी समय है।' मैं इस जगह पर कई बार आया हूं, लेकिन ये शब्द कभी नहीं सुने। सामान महंगे दामों पर बेचते हुए नहीं देखा।ये देखकर भरोसा कितना बढ़ जाता है, जब बख्शीश का परिवार हर गिलास को चमकाने में गर्व का अनुभव करता है! चूंकि उनके ढाबे में डिस्पोजेबल गिलास

इसलिए मैं इस आवाज को लगाने वाले बख्शीश सिंह से मिलने के लिए कार से उतरा, जो अपने बड़े भाई के नाम से 'बलजीत फूड कॉर्नर' नामक ढाबा चलाते हैं।मैंने चारों ओर निगाह डाली। वह झूठ नहीं बोल रहे थे। वास्तव में उनका ढाबा भारत और पाकिस्तान की सीमा को बांटने वाली जीरो माइल पर बने लोहे के विशाल गेट से पहले आखिरी था, इस गेट की सुरक्षा हमारी सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) करती है। चाय की चुस्की लेते हुए लोग, दोनों देशों को विभाजित करने वाले लोहे के दो मजबूत दरवाजों से पहले बने कड़ी सुरक्षा वाले कॉन्क्रीट के गेट देख सकते हैं।इस शनिवार की शाम को मैं 'सीमित हो गई' बीटिंग रिट्रीट समारोह को देखने के लिए वाघा-अटारी सीमा पर था। पहलगाम हमले के बाद सुरक्षा कारणों से 12 दिन निलंबित रहा ये समारोह 20 मई 2025 को फिर से बहाल हुआ था।मैं इस प्रतिष्ठित समारोह को देखना चाहता था, हालांकि इसमें अब लोहे के दरवाजे बंद ही रहते हैं और बीएसएफ तथा पाकिस्तानी रेंजरों के बीच पारंपरिक तौर पर होने वाली हाथ मिलाने की प्रक्रिया भी बंद कर दी गई है।सीमा से 300 फीट दूर खड़े होकर बख्शीश द्वारा परोसी गई चाय का स्वाद लेते हुए मैं ग्राहकों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता देख रहा था। वह दिन में महज 2 से 3 घंटे ही व्यापार करते हैं, जब भीड़ बीटिंग रिट्रीट में देशभक्ति भरे नजारे को देखने आती है और सूर्यास्त के साथ झंडा उतरते ही वापस लौट जाती है।वह जानते हैं यहां उन्हीं ग्राहकों के दोबारा आने की संभावना बहुत कम है। पर फिर भी अपनी सफेद दाढ़ी के पीछे चमकते दांतों वाली चौड़ी मुस्कान व सत्कार के साथ ग्राहकों को प्रभावित करने का कोई मौका वह नहीं चूकते। हालांकि उनकी यह अस्थाई दुकान, खाने की जरूरी चीजें बेचने वाली आखिरी ईटरी है, फिर भी मैंने उन्हें कोई भी का उपयोग नहीं होता, इसलिए उनका परिवार चाय के हर गिलास को बड़े धैर्य से साफ कर रहा था। यहां तक कि वह खुद पर्यटकों से कह रहे थे कि वे उनसे खरीदी पानी की खाली बोतलें यहां-वहां फेंककर गंदगी न रें।बीएसएफ के जवान भी लोगों से गंदगी नहीं फैलाने का आग्रह कर रहे थे। यकीन मानिए बख्शीश सिंह ज्यादा कमाई नहीं कर रहे थे। उनके और उनके घरवालों के कपड़े इस बात का सुबूत थे कि वे बस गुजारा चला रहे थे, लेकिन देश के प्रति उनका प्यार और देशवासियों के प्रति भाईचारा एक अलग ही स्तर पर था।उनके व्यापारिक कौशल में दया की एक मोटी पर्त थी, जो आम तौर पर स्वर्ण मंदिर कहे जाने वाले श्रीहरमिन्दर साहिब के 'लंगर' में दिखती है। जबकि गृहस्थी के गुजारे के लिए लाभ कमाने की मंशा बहुत कम दिख रही थी। ग्राहकों के पास भले ही बिल चुकाते वक्त पांच रुपए के छुट्टे नहीं हों, तब भी वह उसी मुस्कान के साथ उनको बाय बोल रहे थे।यह देखकर मुझे देश के बड़े हवाई अड्डों पर स्थित 'वांगो' जैसे चमक-धमक वाले रेस्तरां याद आ गए, जिनके डिस्प्ले बोर्ड पर लिखा होता है कि वे गर्म कॉफी पीतल के गिलास में परोसते हैं, जबकि वास्तव में वे इसे प्लास्टिक के गिलास में देते हैं। जिससे फिल्टर कॉफी नुकसानदेह हो जाती है।ग्राहकों के पास जब छुट्टे नहीं हों तो काउंटर पर बैठे कर्मचारी एक रुपया भी नहीं छोड़ते, जबकि वह जानते हैं कि उन्होंने कॉफी के लिए बेहद अजीब-सा 231 रुपए का दाम रखा है। मैंने कई बार ऐसे बुजुर्गों को वहां से नाराज होकर जाते देखा है, जो ऑनलाइन भुगतान के अभ्यस्त नहीं होते। उन बुजुर्गों के पास एक रुपया छुट्टा नहीं होता था और वह 240 रुपए देकर 9 रुपए की टिप भी नहीं देना चाहते थे।फंडा यह है कि बड़ा दिल रखने के लिए बड़े बटुए की जरूरत नहीं। इसके लिए महज एक छोटा-सा इरादा ही काफी है।

हम हमेशा नई चीजें नहीं खोजते, जाने-पहचाने में भी सुकून है...

कैसी है पिक्चर?- मैंने पूछा। 'इट्स अ वन टाइम वॉच'- मुझे जवाब मिला। छोड़ो पैसे बचे, टाइम बचा, मैंने अपने आपसे कहा। बात आई-गई हो गई। कई फिल्में आती हैं और जाती हैं और इसी तरह के वाक्य सुनने को मिलते है। हालांकि मैं उस नस्ल की पैदाइश हूं, जब 'शोले' 20 बार और 'दीवार' 30 बार देखी जाती। आप कहेंगे ऐसी फिल्में बनती कहां हैं आजकल, और आपका कहना बिलकुल जायज हैं।

पर क्या ये सिर्फ अच्छी और खराब फिल्मों की बात है, या फिर फिल्मों से ही हमारा रिश्ता बदल गया है? ये भी पूछा जा सकता है कि हमारा समय से रिश्ता बदल गया है और फिल्मों को 10-20 बार न देखना उस बदलते रिश्ते का एक उदहारण है। मेरी जिंदगी सिर्फ फिल्में देख-देख कर नहीं, सिर्फ गाने सुनकर और गुनगुनाकर नहीं, पर फिल्मों द्वारा जिंदगी को देखने से बनी है।

टीएस एलियट कहते हैं- 'आई हैव मेज़र्ड-आउट माय लाइफ विद कॉफी स्पून्स।' यानी मैंने अपने जीवन को कॉफी की चम्मचों से नापा है। पर मैं यही बात अमिताभ बच्चन की फिल्मों के लिए कहूंगी। सत्तर और अस्सी के दशक के अमिताभ। उसके बाद फिर मेरी फिल्मों से दूरी हो गई! कोई पूछता है जब यह या वह वाकया हुआ, तब तुम कितने साल की थीं? मैं सोचने लगती हूं, जब 'दीवार' देखी थी तो शायद मैं इतने साल की थी।

कहने का मतलब है ?कि हमारे काल पर फिल्मों की छाप थी और हम फिल्म-काल में रहते थे। इस तीव्र और गहरे रिश्ते के कई फायदे थे, जिनमें से एक यह था कि हम फिजूल में वॉट्सएप्प और सोशल मीडिया पर वक्त बर्बाद नहीं करते थे।

हमारे जेहन में कहानियां, गाने और डायलॉग भरे हुए थे और जिस तरह लोग कबीर या रहीम के दोहे दोहराते हैं, हम फिल्मी बातें दोहराते थे। हमारे लिए वे किसी दोहों से कम नहीं थीं। उन्हीं से हम सीखते कि दुःख सब पर आते हैं, कि कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना वगैरह-वगैरह।जिस समाज में गरीबी, असमानताएं और हिंसा से भरे वाकये हों, उसे फिल्मों द्वारा एक सुकून मिलता। शायद इसलिए हम बार-बार उसकी तरफ जाते। कहानियां हमेशा नई नहीं थी और किस मोड़ पर आकर उनका अंत होगा, वह भी हमें पता रहता था। यह मानने की जरूरत नहीं है कि हम हमेशा नई चीज ढूंढते हैं। अगर ऐसा होता तो लोग बार-बार रामलीला देखने क्यों जाते? जाना-पहचाना देखने में भी एक सुकून होता है।

बहरहाल, बोलचाल की जबान में फिल्म के डायलॉग आ जाते तो उसे झूठ नहीं माना जाता। शायद वह अलंकार ही समझा जाता! मुझे याद है मां गुस्सा होकर पिताजी से कहतीं- 'मैं चुप नहीं रहूंगी। जैसे मीना कुमारी कहती मुझे भी वही कहना है!

' यह सुनकर कोई हंस नहीं देता, परंतु उस गुस्से को ज्यादा दमदार समझता। अब आप सोचिए कि एक बार फिल्म देखने पर इतनी गहरी बात कैसे कही जा सकती है! फिल्मों के शीर्षक, गीतों के बोल, प्यार और रुस्वाई की अभिव्यक्तियां- यानी एक सम्पूर्ण शब्दावली ने हमारी भाषा को बनाया, सजाया और संवारा।

इसी से हमने समझा कि दर्द मीठा भी हो सकता है, कि जब गुस्ताखी करनी हो तो दिल के बहाने हम कर सकते हैं। अपने साहसी प्रयोजनों को 'दिल बेकरार है' कहकर जता सकते हैं।

जरा सोचिए, ऐसे कितने ही गाने हैं जिनमें दिल को माध्यम बना दिया गया है- 'मेरे दिल में आज क्या है, तू कहे तो मैं बता दूं' वगैरह। कभी-कभी आंखें भी काम कर जातीं, क्योंकि जो होठों पर इनकार होता, वह आंखों में इकरार बन जाता। जिस समाज में प्राइवेसी नहीं और घर-परिवार की निगाहें आप पर हों, वहां आप कैसे ठीक से किसी पर निगाह डालेंगे? बात आंखों पर आकर रुक जाती। समझदार के लिए इशारा काफी था। तो चलिए, मैं वहीं लौटती हूं, जहां से शुरुआत की थी। फिल्मों को बार-बार देखना, उन्हें अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लेना- यह एक ऐसी नजदीकी को दर्शाता है, एक ऐसा बहाना, जिसकी हमें उस दौर में जरूरत थी, जिसमें हम जी रहे थे। हमारा शरीर, हमारी अपनी पहचान का एहसास, समय को लेकर हमारी सोच- ये सब कुछ बदल गया है।

शायद मेरे लिए इन दो अलग-अलग दौरों की तुलना करना बेकार ही है। गुजरा हुआ जमाना, आता नहीं दोबारा, हाफिज खुदा तुम्हारा... फिल्मों की कहानियां हमेशा नई नहीं थीं और किस मोड़ पर आकर उनका अंत होगा, वह भी हमें पता था। यह मानने की जरूरत नहीं है कि हम हमेशा नई चीज ढूंढते हैं।

अगर ऐसा होता तो लोग बार-बार रामलीला देखने क्यों जाते? (ये लेखिका के अपने विचार हैं रीटा कोठारी)

अनजाने में विवाद हम बढ़ाते, दोष औरों को देते हैं:दूसरों को बदलने की जिद छोड़ें, अपने भीतर की 'कर्कशता' को पहचानें: एक्सपर्ट

टाइम मैगजीन. न्यूयॉर्क। 'विवाद किसी के साथ भी हो...जीवन साथी, परिजन, दोस्त या सहकर्मी... अक्सर यही लगता कि झगड़े की वजह सामने वाला है। लेखक जेफरसन फिशर कहते हैं, 'हम सब कभी न कभी 'मुश्किल इंसान' होते हैं।' चुनौती इसे स्वीकारने में नहीं, बल्कि खुद को पहचानने में है। एक्सपर्ट के मुताबिक कुछ संकेत बताते हैं कि आप अनजाने में विवाद बढ़ा रहे हैं। इन्हें समझना जरूरी है, ताकि बातचीत मुद्दे पर रहे, आरोपों पर नहीं। कैसे पहचान सकते हैं इन संकेतों को, जानिए-असली मुद्दे से भटकना-जीवनसाथी से बहस में 'हमेशा' या 'कभी नहीं' जैसे शब्दों का प्रयोग बातचीत को पटरी से उतार देता है। फिशर के अनुसार, ये शब्द असली मुद्दे को दबाकर पुरानी बातों की 'टाइमलाइन' खोल देते हैं। थेरेपिस्ट अताली अब्रामोविची कहती हैं कि ऐसे कड़े शब्द सामने वाले को रक्षात्मक बना देते हैं। आरोप लगाने के बजाय खास घटना या तथ्य पर फोकस रखें। विवाद बढ़ने के बजाय सुलझता

है। पहचान पर हमला-बहस के दौरान 'तुम आलसी हो' जैसे जुमले पहचान पर हमले होते हैं। अताली कहती हैं,'पहचान पर चोट पहुंचने से व्यक्ति जुड़ने के बजाय विमुख हो जाता है। दोष मढ़ने के बजाय भावनाएं व्यक्त करें, जैसे- जब तुमने मेरी बात काटी, मुझे बुरा लगा।' भावनाओं पर कोई बहस नहीं कर सकता। हिसाब-किताब रखना-आप भी याद रखते हैं कि पिछली दिवाली पर किसके घर गए थे या बिजली का बिल किसने भरा था? फिशर कहते हैं,'रिश्तों को अकाउंटिंग जैसे चलाना इसे बोझिल बना देता है। हिसाब रखकर हम खुद को कमतर महसूस करते हैं। अपने साहसी प्रयोजनों को 'दिल बेकरार है' कहकर जता सकते हैं। लक्ष्य 'सही साबित होना' नहीं, 'एक टीम' बनना होना चाहिए। व्यवहार में कठोरता-मनोवैज्ञानिक हैरियट लर्नर कहती हैं,'दोस्त आपको पार्टी में बुलाने से पहले सोचते हैं या घरवाले बात करने से पहले शब्दों को तौलते हैं, तो समझ लें कि वे आपकी प्रतिक्रिया को लेकर डरे हुए रहते हैं। यह संकेत है कि आपके व्यवहार में कठोरता आ गई है।' अलग मानक-फिशर एक टेस्ट बताते हैं। आप लेट होते हैं तो वजह रहती है- ट्रैफिक था। काम था। पर कोई और लेट हुआ तो आपने उसे लापरवाह माना, तो यह दोहरा मानक है। हम अपने व्यवहार को तर्कसंगत करते हैं। दूसरों के उसी व्यवहार को जज करते हैं। यह बहस में भी होता है। अपने तीखे टोन को 'मूड' कहकर टाल देते हैं। कोई और कहे तो बुरा मानते हैं। बचाव की मुद्रा-बचाव की मुद्रा जुड़ाव खत्म करती है। आलोचना सुनकर तुरंत 'लेकिन' कहने के बजाय, सामने वाले की सुनें। आप 2फीसदी भी सहमत हों, तो उतनी जिम्मेदारी लेकर माफी मांगें। पहले उन्हें सुनें, सफाई बाद में दें।'

कॉमर्शियल सिलेंडर रु11.50 और दूध रु9 तक महंगा,टाटा-हुंडई की कारों की कीमतें रु25 हजार तक बढ़ीं, बिना ई-केवाईसी अटक सकती है एलपीजी सब्सिडी

नयी दिल्ली। जिससे कुल मिलाकर खरीद मूल्य में 6 रुपए प्रति लीटर का इजाफा हुआ है।

कारणः पशुओं के हरे चारे, भूसे और खली के दामों के साथ-साथ उनके रख-रखाव और ट्रांसपोर्ट के खर्चों में भारी बढ़ोतरी हुई है। इस वजह से दूध के दाम बढ़े हैं। असर-आम जनता परः मुंबई में थोक दाम बढ़ने से खुदरा दूध की कीमतें बढ़ेंगी। आगामी त्योहारों के सीजन से ठीक पहले दही, पनीर और मिठाइयों जैसे डेयरी उत्पादों के महंगे होने से आम लोगों का बजट प्रभावित होगा। 3. ई-केवाईसी नहीं कराई, अटक सकती है एलपीजी सब्सिडी-बदलावः एलपीजी सब्सिडी का फायदा जारी रखने के लिए ई-केवाईसी कराने की आखिरी तारीख 31 अगस्त थी। तेल कंपनियों ने सभी घरेलू एलपीजी ग्राहकों से इस काम को पूरा करने को कहा था। असरः तारीख बीत जाने के बाद बायोमेट्रिक पहचान न कराने वाले ग्राहकों की सब्सिडी रुक सकती है। गैस मिलने में भी परेशानी आ सकती है। हालांकि, पहचान दर्ज न होने पर सिलेंडर की बुकिंग तुरंत बंद होगी या नहीं, यह कंपनी के नियमों पर निर्भर करेगा। जिन लोगों ने अभी तक यह काम नहीं कराया है, उन्हें किसी भी असुविधा से बचने के लिए जल्द से जल्द अपनी गैस एजेंसी से संपर्क करना चाहिए। 4. विदेश जाने के लिए बोर्डिंग पास पर स्टैम्प की जरूरत नहीं-बदलावः भारत से विदेश जाने वाले यात्रियों के लिए 1 सितंबर 2026 से इमिग्रेशन काउंटर पर बोर्डिंग पास पर स्टैम्प लगवाने का नियम खत्म कर दिया गया है। अब प्रोसेस डिजिटल हो गई है। अब यात्री इमिग्रेशन के समय अपने फोन में ई-बोर्डिंग पास दिखा सकते हैं। हालांकि, सही पासपोर्ट, वीजा और सुरक्षा जांच से जुड़े बाकी सभी नियम पहले की तरह ही लागू रहेंगे।असरः इस नए नियम से एयरपोर्ट पर डिपार्चर प्रोसेस आसान होगी और यात्रियों का समय बचेगा। इमिग्रेशन काउंटर पर भीड़ कम होगी और विदेश जाने वालों का सफर आसान हो जाएगा। 5. आज से महंगी होंगी टाटा और हुंडई की कारें-बदलावः टाटा मोटर्स ने आज से अपनी गाड़ियों के सभी मॉडल्स और वैरिएंट्स को 25,000 रुपए तक महंगा कर दिया है। हुंडई मोटर इंडिया ने भी कीमतों में 1फीसदी तक का इजाफा किया है। कारणः कच्चे माल (कमोडिटी) के बढ़ते दाम, परिचालन लागत (ऑपरेटिंग कॉस्ट) और महंगाई के दबाव को कम करने के लिए कंपनियों ने यह फैसला लिया है। असरः सितंबर से टाटा या हुंडई की नई कार या एसयूवी खरीदने वाले ग्राहकों को ज्यादा पैसे चुकाने होंगे। दोनों कंपनियों ने स्पष्ट किया है कि बढ़ोतरी की सटीक रकम कार के मॉडल और वैरिएंट पर निर्भर करेगी। इसलिए बुकिंग से पहले ग्राहकों को नई प्राइस लिस्ट चेक करनी होगी। 6. मुंबई में सीएनजी और घरेलू पीएनजी की कीमतें बढ़ीं-बदलावः महानगर गैस लिमिटेड ने 1 सितंबर की आधी रात से सीएनजी रु2 प्रति किलोग्राम महंगी कर दी है। इस बढ़ोतरी के बाद मुंबई और आसपास के इलाकों में सीएनजी की नई कीमत रु88 प्रति किलोग्राम हो गई है। वहीं पीएनजी के दामों में रु1 प्रति स्टैंडर्ड क्यूबिक मीटर का इजाफा किया है। कारणः मिडिल ईस्ट में चल रहे तनाव के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्राकृतिक गैस के दाम बढ़े हैं। साथ ही सीएनजी की मांग को पूरा करने के लिए आयातित एलएनजी (आरएलएनजी) पर निर्भरता बढ़ी है, जो अब ज्यादा महंगी मिल रही है। असरः मुंबई, ठाणे, रायगढ़ समेत महाराष्ट्र के 6 जिलों और कर्नाटक के 2 जिलों के लगभग 13 लाख सीएनजी वाहन चालकों का रोजाना का खर्च बढ़ जाएगा। वहीं महंगी पीएनजी का असर मुंबई और आसपास के लगभग 30 लाख परिवारों पर होगी। 7. हवाई ईंधन महंगा, टिकट के दाम बढ़ सकते हैं-बदलावः अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने के कारण देश में हवाई ईंधन के दाम लगातार दूसरे महीने बढ़ा दिए गए हैं। एटीएफ में रु6.28 प्रति लीटर (5.46फीसदी) का इजाफा किया गया है। नई कीमत रु115 से बढ़कर रु121.28 पहुंच गई है। असरः किसी भी एयरलाइन के कुल कामकाजी खर्च में ईंधन की हिस्सेदारी 35फीसदी से 40फीसदी तक होती है। एटीएफ महंगा होने से विमान कंपनियों की ऑपरेटिंग कॉस्ट बढ़ जाएगी। कंपनियां इस बढ़े हुए खर्च का बोझ यात्रियों पर डाल सकती हैं, जिससे आने वाले दिनों में हवाई टिकट महंगे होने की पूरी आशंका है।

होर्मुज में समुद्री माइंस से टकराया टैंकर, लगी आग, इंजन बंद पड़ा, अमेरिका का एक महीने बाद फिर ईरान फिर हमला

तेहरान।दुनिया के तेल और गैस कारोबार का बड़ा हिस्सा इसी रास्ते से होकर गुजरता है।

संघर्ष से पहले दुनिया में इस्तेमाल होने वाले करीब पांचवें हिस्से

के तेल की आवाजाही इसी रास्ते से होती थी। यही वजह है कि होर्मुज में तनाव बढ़ने या जहाजों की आवाजाही रुकने से कच्चे तेल की सप्लाई और कीमतों पर सीधा असर पड़ सकता है। अमेरिका और ईरान के बीच यहां बढ़ती सैन्य गतिविधि को इसी कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गंभीर माना जा रहा है। फरवरी से जारी है अमेरिका-इजराइल और ईरान का युद्ध-अमेरिका और इजराइल ने 28 फरवरी को ईरान पर हमला किया था। इसके जवाब में ईरान ने इजराइल और उन खाड़ी देशों पर हमले किए, जहां अमेरिकी सैन्य ठिकाने मौजूद हैं। संघर्ष को अब छह महीने से ज्यादा हो चुके हैं और हाल के हफ्तों में स्थिति गतिरोध जैसी बनी हुई है। अमेरिका और इजराइल के हमलों के अलावा लेबनान में इजराइली हमलों से भी भारी नुकसान हुआ है। इन हमलों में हजारों लोगों की मौत और लाखों लोग विस्थापित हुए हैं। संघर्ष में अब तक 18 अमेरिकी सैनिकों के मारे जाने की जानकारी है। जंग के बाद दो रास्तों में बंटा होर्मुज-जंग शुरू होने से पहले होर्मुज को एक ही समुद्री रास्ता माना जाता था। जहाज तय रास्ते से गुजरते थे। उनका रास्ता बंदरगाह, जहाज के समझौते और सुरक्षा को देखकर तय होता था। लेकिन अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बढ़ने के बाद यहां दो अलग रास्तों की बात होने लगी। ईरानी रास्ताः यह होर्मुज के उत्तरी हिस्से में ईरान के तट के पास है। यह लारक और किश्म द्वीपों के करीब से गुजरता है और ईरान के बंदरगाहों और तेल टर्मिनलों तक जाता है। ओमानी रास्ताः यह होर्मुज के दक्षिणी हिस्से में ओमान के करीब है और ईरान के तट से दूर है।अमेरिका इसी रास्ते से जहाजों को गुजरने पर जोर देता है। अमेरिकी नौसेना की सुरक्षा में चलने वाले कई कॉमर्शियल जहाज भी इसी रास्ते का इस्तेमाल करते हैं।

उत्तराखंड में घर में मलबा घुसा, 5 मौतें- केदारनाथ में बारिश रुकी यात्रा फिर शुरू, यूपी के चित्रकूट में बाढ़ से 80 घर गिरे

नई दिल्ली। इसके प्रभाव से आज रांची समेत राज्य के

लगभग सभी स्थानों पर बारिश होने की संभावना है। बिहार में मौसम विभाग ने पटना समेत प्रदेश के 14 जिलों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इन जिलों में आकाशीय बिजली गिरने को लेकर विशेष चेतावनी दी गई है। वहीं, बाकी 24 जिलों में मौसम सामान्य रहने की संभावना हैं। ज्यादातर जिलों में तापमान 34 से 36 डिग्री के आसपास रह सकता है। मौसम विभाग के अनुसार, 4 सितंबर को भी बिहार के कई जिलों में बारिश होने की संभावना हैं। इस मानसूनी सीजन में मध्य प्रदेश में 74फीसदी यानी, औसत 27.7 इंच बारिश हो चुकी है। अकेले अगस्त महीने में ही 12 इंच पानी गिरा। अब सितंबर में 9.6 इंच पानी की जरूरत है। इसके बाद प्रदेश की सामान्य बारिश 37.3 इंच का आंकड़ा पार होगा। राजस्थान में सोमवार को केवल डूंगरपुर में हल्की बारिश हुई। अन्य सभी जिलों में मौसम साफ रहा। अगस्त खत्म होने के साथ ही मानसून का एक तिहाई समय भी बीत गया। इस बार पूरे अगस्त में 68एमएम से भी कम बरसात हुई, जो पिछले 11 साल में दूसरी बार सबसे कम बरसात होने का रिकॉर्ड है। यूपी में एक बार फिर मानसून सक्रिय हो गया है। चित्रकूट में मंदाकिनी नदी में आई बाढ़ ने तबाही मचाई है। 80 से अधिक कच्चे मकान गिर गए हैं। रायबरेली के ऊंचाहार में बारिश के कारण पानी भरने से एनटीपीसी परियोजना की यूनिट नंबर दो बंद हो गई। रायबरेली में ही बिजली गिरने से एक की मौत हो गई।

नेपाल बाढ़ में कैसे बचा 40 साल पुराना 'हरा घर',मालिक बोला- नदी किनारे था घर इसलिए ज्यादा ध्यान दिया था

काठमांडू। नेपाल में 26 अगस्त को त्रिशूली नदी की बाढ़ ने भारी तबाही मचाई। तेज बहाव में गाड़ियां, इमारतें और लोगों के

सामान बह गए, लेकिन नुवाकोट जिले में नदी किनारे बना 40 साल पुराना हरा घर लगभग सुरक्षित बच गया। बाढ़ के बाद घर की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए। लोग इसे 'चमत्कारी घर' कहने लगे। एक ही सवाल था कि इतनी तेज बाढ़ में यह घर कैसे बच गया। अब घर के मालिक प्रकाश ने बताया है कि घर की मजबूत नींव इसकी बड़ी वजह हो सकती है। उन्होंने बताया कि यह घर 40 साल पुराना है। नदी के पास बनाते समय इसकी नींव पर खास ध्यान दिया गया था। घर के नीचे सड़क बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री की दो-तीन परतें भी डाली गई थीं। बाढ़ के बीच परिवार घर की छत पर पहुंचा-प्रकाश ने उस दिन की कहानी भी बताई है। उन्होंने इंडिया टुडे की सहयोगी वेबसाइट द लल्लनटॉप से बात करते हुए बताया कि पानी बढ़ने पर परिवार घर की ऊपरी मंजिलों में चला गया और करीब एक से डेढ़ घंटे तक सबसे ऊंचे हिस्से में फंसा रहा। प्रकाश ने बताया कि बाढ़ का पानी तेजी से बढ़ रहा था। तब लगा कि शायद यह उनके जीवन का आखिरी पल हो सकता है। उस समय परिवार के छह लोग थे, जिनमें पांच घर के अंदर मौजूद थे। प्रकाश पास की अपनी दुकान पर थे, तभी उन्हें बाढ़ का पानी बढ़ने की खबर मिली। वह तुरंत घर पहुंचे और परिवार के लोगों को अंदर आने के लिए कहा। बाहर निकलते ही उन्होंने देखा कि पानी के तेज बहाव ने उनकी गाड़ी को पलट दिया है। यह देखकर वह वापस घर के अंदर भाग गए। परिवार पहले घर की चौथी मंजिल पर पहुंचा। यह इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल थी, लेकिन कुछ देर बाद बाढ़ का पानी वहां तक भी पहुंच गया। इसके बाद सभी लोग घर के सबसे ऊंचे हिस्से में चले गए। पाइप और रस्सी से परिवार को बाहर निकाला-प्रकाश के मुताबिक, परिवार करीब एक से डेढ़ घंटे तक घर के सबसे ऊंचे हिस्से में फंसा रहा। पानी थोड़ा कम होने के बाद पास के टोल इलाके के लोग उनकी मदद के लिए पहुंचे। उन्होंने दोनों इमारतों के बीच एक पाइप लगाया और रस्सी के सहारे परिवार को सुरक्षित दूसरी तरफ पहुंचाया। घर का ढांचा मजबूत थाः यह घर सिर्फ पत्थर और गारे से नहीं बना था। इसमें कंक्रीट के मजबूत पिलर और बीम थे, जिनमें लोहे की सरिया लगी थी। पिलर और बीम आपस में जुड़े थेः घर का पूरा ढांचा एक मजबूत फ्रेम की तरह बना था।

इससे पानी और मलबे का जोर किसी एक दीवार पर नहीं पड़ा, बल्कि उसका असर पूरे ढांचे में बंट गया। नींव मजबूत थीः घर नदी के करीब था, इसलिए इसकी नींव को मजबूत बनाने पर खास ध्यान दिया गया था। गहरी और मजबूत नींव ने घर को अपनी जगह टिकाए रखने में मदद की।

घर सीधे सबसे तेज बहाव की चपेट में नहीं थाः घर नदी के मुख्य और सबसे तेज बहाव के बीच में नहीं बना था। पानी और मलबे का बड़ा हिस्सा इसके दोनों तरफ से निकल गया।

मलबे ने भी कुछ हद तक बचाव कियाः बाढ़ के शुरुआती दौर में जमा हुआ कीचड़ और मलबा बाद में एक तरह की ढाल बन गया। इससे बाद में आने वाले पानी का सीधा दबाव घर पर कुछ कम हुआ।

मलबे के दबाव को ढांचे ने झेलाः मजबूत पिलर, बीम और नींव ने मलबे और पानी से लगने वाले साइड के दबाव को सहने में मदद की। यानी, घर का मजबूत स्ट्रक्चर, मजबूत नींव, उसकी लोकेशन और आसपास जमा मलबा- इन सभी वजहों ने मिलकर घर को बचाए रखने में भूमिका निभाई।

मोदी की फिर अपील-जरूरत न हो तो सोना नहीं खरीदें,वैश्विक संकट में भारत की जीडीपी 7.8फीसदी दर से बढ़ी, यह देशवासियों की मेहनत का नतीजा

नयी दिल्ली। सोना खरीदने से रुपया कैसे कमजोर होगा,

इसका महंगाई पर असर और फिजिकल गोल्ड की जगह कहां निवेश किया जा सकता है? सोने का आयात कम हो तो रुपया मजबूत होता है-भारत अपने इस्तेमाल का करीब 99फीसदी सोना विदेशों से खरीदता है। 2025-26 में सोने का ये इम्पोर्ट बिल करीब 6.4 लाख करोड़ रुपए का था। भारत को विदेश से सोना खरीदने पर विदेशी मुद्रा डॉलर में भुगतान करना पड़ता है। जब हम सोना कम खरीदते हैं, तो देश का विदेशी मुद्रा भंडार सुरक्षित रहता है और डॉलर की मांग कम हो जाती है। डॉलर की मांग घटने से विदेशी मुद्रा बाजार में रुपए पर दबाव कम होता है, जिससे रुपया डॉलर के मुकाबले मजबूत बना रहता है। रुपया मजबूत हो तो महंगाई कम होती है-रुपए के मजबूत होने से कच्चे तेल और अन्य जरूरी चीजों का आयात सस्ता हो जाता है, क्योंकि भारत को इनके भुगतान के लिए कम रुपए खर्च करने पड़ते हैं। इससे देश में महंगाई को नियंत्रित रखने में मदद मिलती है।भारत ने इस साल 4.76फीसदी कम सोना खरीदा, 24फीसदी ज्यादा भुगतान किया-2025-26 में भारत ने पिछले कारोबारी साल के मुकाबले 4.76फीसदी कम सोना खरीदा, लेकिन सोने के इम्पोर्ट बिल में 24फीसदी तक का उछाल आया। इसकी सबसे बड़ी वजह थी- सोने की तेजी से बढ़ती कीमतें। अभी सोने की कीमत करीब 1.43 लाख डॉलर प्रति किलो है। सोने की जगह ईटीएफ में निवेश कर सकते हैं-फिजिकल गोल्ड (जैसे गहने या सिक्के) के मुकाबले ईटीएफ में निवेश करना अधिक सुरक्षित और फायदेमंद है। जैसे इसकी चोरी का डर नहीं होता। लॉकर का खर्च नहीं लगता।

पित्रोदा बोले- गरीब-दलित, अल्पसंख्यकों की बात करना दिमागी नक्सल नहीं,मुस्लिम-ईसाई, यहूदी और बौद्धों से पूछिए भारत में कैसा महसूस करते हैं

नयी दिल्ली। इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के चेयरमैन सैम पित्रोदा ने पीएम मोदी, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत

और केंद्र सरकार पर कई मुद्दों को लेकर निशाना साधा। उन्होंने प्रधानमंत्री के 'दिमागी नक्सल' वाले बयान पर कहा कि गरीबों, दलितों और अल्पसंख्यकों के पक्ष में बोलना नक्सलवाद या कम्युनिज्म नहीं है। न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत में मंगलवार को पित्रोदा ने कहा कि इंसानियत को हर चीज से ऊपर रखना चाहिए और सभी लोग एक ही जगह से आए हैं। वहीं, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बयान पर उन्होंने कहा कि मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध और यहूदी लोगों से पूछना चाहिए कि वे आज भारत में कैसा महसूस करते हैं। दरअसल, 15 अगस्त के भाषण में मोदी ने कहा था कि देश से नक्सलवाद खत्म हो गया, लेकिन दिमागी नक्सल अभी भी मौजूद हैं। पित्रोदा बोले- 2014 से पहले बनी चीजों का फायदा आज मिल रहा, 6 बड़ी बातें- 1. भागवत के बयान परः 'सिर्फ यह कहना काफी नहीं है कि मुस्लिम, ईसाई, यहूदी और बौद्ध का सम्मान किया जाता है। अगर व्यवहार में इसके उलट होता है तो कथनी और करनी में अंतर दिखाई देता है। किसी के बारे में कही गई बातों से ज्यादा महत्वपूर्ण उसके साथ किया जाने वाला व्यवहार है। वास्तविक स्थिति समझने के लिए लोगों के अनुभवों को देखना जरूरी है।' 2. 2014 से पहले की सरकारों के काम परः 'आज देश में जो कई सुविधाएं और संस्थान दिखाई दे रहे हैं, उनमें से बड़ी संख्या पिछले 70 सालों में तैयार हुई। पहले की सरकारों से भी गलतियां हुई होंगी, लेकिन देश में बड़ी संख्या में संस्थान और व्यवस्थाएं खड़ी की गईं। आईआईटी और आईआईएम जैसे संस्थानों से निकले लोग आज दुनियाभर में काम कर रहे हैं। यह देश के शुरुआती नेतृत्व द्वारा तैयार की गई व्यवस्था का परिणाम है। 2014 के बाद ऐसे कौन से बड़े नए संस्थान बनाए गए, जिनकी तुलना उस दौर की संस्थागत विरासत से की जा सके।' 3. जीडीपी की 7.8फीसदी ग्रोथ परः 'सिर्फ जीडीपी बढ़ना ही पर्याप्त नहीं है। यह देखना जरूरी है कि इस आर्थिक वृद्धि का फायदा किसे मिल रहा है। क्या यह विकास देश के आम लोगों तक पहुंच रहा है और क्या इसका लाभ समान रूप से बंट रहा है।' 4. राहुल गांधी के समर्थन मेंः 'राहुल गांधी में बौद्धिक क्षमता, दृढ़ता, साहस और अपने विचारों पर विश्वास है। राहुल कांग्रेस की 'आइडिया ऑफ इंडिया' की सोच को सामने रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।' 5. संस्थाओं की स्वतंत्रता परः 'सत्ता का बहुत अधिक केंद्रीकरण प्रधानमंत्री कार्यालय में होने से संस्थाओं की स्वतंत्रता कमजोर हुई है। न्यायपालिका, चुनाव आयोग, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), आयकर विभाग और स्थानीय पुलिस संस्थाओं को सरकार के खिलाफ स्वतंत्र रूप से कार्रवाई करने में दबाव महसूस होता है। अगर कोई संस्था सरकार के खिलाफ कदम उठाती है तो उस पर कार्रवाई या दबाव का खतरा रहता है। लोकतंत्र में स्वतंत्र संस्थाएं और मजबूत 'वॉचडॉग' जरूरी हैं, लेकिन मौजूदा व्यवस्था में ऐसे निगरानी तंत्र कमजोर हुए हैं।' 6. संसद के मानसून सत्र परः 'संसद में बहस का स्तर देखकर मुझे निराशा होती है।

कई बार सांसद मुद्दों पर चर्चा करने के बजाय एक-दूसरे पर चिल्लाते नजर आते हैं। राहुल गांधी ने संसद में अच्छा प्रदर्शन किया और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी प्रभावी तरीके से अपनी बात रखी। इस दौरान सरकार कई मुद्दों पर दबाव में नजर आई।'

पाकिस्तान, तुर्किये और सऊदी की पहली रक्षा बैठक,तीनों देशों के विदेश और रक्षा मंत्री मिले, सैन्य तकनीक और हथियारों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति

इस्तांबुल। पाकिस्तान, तुर्किये और सऊदी अरब के बीच मक्का संयुक्त रक्षा समझौते के तहत पहली बैठक सोमवार को इस्तांबुल में हुई। इसमें तीनों देशों के विदेश और रक्षा मंत्री के साथ सैन्य प्रमुख भी शामिल हुए। बैठक में सुरक्षा और रक्षा सहयोग मजबूत करने पर सहमति बनी। जारी किए गए जॉइंट स्टेटमेंट के मुताबिक तीनों देश रक्षा उद्योग, नई सैन्य तकनीक और हथियारों के संयुक्त उत्पादन में मिलकर काम करेंगे। इसका मकसद सेनाओं को मजबूत करना और आपसी तालमेल बढ़ाना है। तीनों देशों ने क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए साथ काम करने का भी फैसला किया। आपसी रक्षा साझेदारी बढ़ाने के लिए सऊदी अरब में संयुक्त कार्यालय बनाया जाएगा। इसके महासचिव का पद पहले 3 साल तक पाकिस्तान के पास रहेगा। तीनों देशों ने 7 अगस्त को मक्का में संयुक्त रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इसके तहत किसी एक देश पर हमला तीनों देशों पर हमला माना जाएगा। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच इस समझौते को तीनों देशों के लिए अहम माना जा रहा है। गठबंधन का नाम 'मक्का डिफेंस अलायंस' हुआ-तुर्किये, पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच मक्का में हुए रक्षा समझौते को अब आधिकारिक नाम मिल गया है। तुर्किये के विदेश मंत्री हाकान फिदान ने बताया कि तीनों देशों के गठबंधन का नाम 'मक्का डिफेंस अलायंस' रखा गया है। तुर्किये के विदेश मंत्री हाकान फिदान ने कहा कि मक्का रक्षा समझौते के साथ क्षेत्र में सुरक्षा और सहयोग का नया ढांचा बनाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। दूसरे क्षेत्रीय देश भी इस गठबंधन में शामिल हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि गठबंधन के लिए रणनीतिक, राजनीतिक और रक्षा समिति बनाई गई है। साथ ही जरूरी संस्थागत ढांचा तैयार करने का काम भी शुरू हो चुका है। पाक बोला- 6-7 मुस्लिम देश मक्का अलायंस में शामिल होना चाहते हैं- पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने कहा है कि 6 से 7 मुस्लिम बहुल देश मक्का डिफेंस समझौते में शामिल होने में रुचि दिखा रहे हैं। हालांकि उन्होंने इस समझौते में कथित रुचि देखा रहे देशों का नाम नहीं लिया है। इस समझौते के तहत भविष्य में अन्य देशों के जुड़ने की संभावना है।बांग्लादेश पहले ही इस समझौते में रुचि दिखा चुका है। विदेश राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने कहा कि इस समझौते में शामिल होने से बांग्लादेश के दूसरे देशों के साथ संबंध प्रभावित नहीं होंगे और वह अपनी विदेश नीति को संतुलित तरीके से आगे बढ़ाएगा। हालांकि, बांग्लादेश को अभी तक इस समझौते में शामिल होने का औपचारिक न्योता नहीं मिला है। विदेश मंत्री खलीलुर रहमान ने कहा है कि अगर ऐसा प्रस्ताव आता है तो बांग्लादेश उस पर सकारात्मक रूप से विचार करेगा।

कमर-जांघों की चर्बी सिर्फ मोटापा नहीं,हो सकता है लिपेडेमा, डॉक्टर से जानें इसके लक्षण, इलाज और बचाव के तरीके

मुंबई। कुछ महिलाओं की जांघों और कूल्हों पर जरूरत से ज्यादा चर्बी जमा हो जाती है। डाइटिंग और रेगुलर एक्सरसाइज से भी यह चर्बी कम नहीं होती। अक्सर लोग इसे मोटापा समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन कई बार यह लिपेडेमा का संकेत हो सकता है। यह एक मेडिकल कंडीशन है, जिसमें शरीर के निचले हिस्से में असामान्य रूप से फैट जमा होता है। यह समस्या महिलाओं में ज्यादा देखी जाती है। 'नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन' में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, दुनिया भर में करीब 11इ वयस्क महिलाएं इससे प्रभावित हैं। इसलिए आज 'फिजिकल हेल्थ' में लिपेडेमा को विस्तार से समझेंगे। साथ ही जानेंगे कि- लिपेडेमा और सामान्य मोटापे में क्या अंतर है? लिपेडेमा के लक्षण क्या हैं? किस स्थिति में डॉक्टर को दिखाना जरूरी है? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. अंकित पोतदार, कंसल्टेंट, लेप्रोस्कोपी, बेरियाट्रिक एंड रोबोटिक सर्जन, कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल, मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- लिपेडेमा क्या है? जवाब- लिपेडेमा फैट टिश्यू से जुड़ा एक क्रॉनिक डिसऑर्डर है। इसमें शरीर के कुछ हिस्सों (खासकर जांघों, कूल्हों, नितंबों और पैरों) में असामान्य रूप से फैट जमा होने लगता है। सवाल- लिपेडेमा क्यों होता है? जवाब- लिपेडेमा की सटीक वजह अभी तक स्पष्ट नहीं है। हालांकि 20-60% मरीजों में इसकी फैमिली हिस्ट्री मिलती है। इसलिए एक्सपर्ट्स मानते हैं कि जेनेटिक फैक्टर्स इसमें अहम भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा हार्मोनल बदलाव भी इससे जुड़े हो सकते हैं। सवाल- लिपेडेमा कितने प्रकार का होता है? जवाब- लक्षण के आधार पर लिपेडेमा को 5 प्रकारों में बांटा गया है- टाइप 1 फैट नाभि (बेली बटन) से लेकर कूल्हों तक जमा होता है। टाइप 2 फैट पेल्विस (श्रोणि) से घुटनों तक जमा होता है। टाइप 3 : फैट पेल्विस और टखनों के बीच होता है। टाइप 4: फैट कंधों और कलाइयों के बीच होता है। टाइप 5: फैट घुटनों से टखनों तक जमा होता है। ध्यान रखें, किसी भी व्यक्ति को एक ही समय में कई प्रकार का लिपेडेमा हो सकता है। सवाल- लिपेडेमा और सामान्य मोटापे में क्या अंतर है? जवाब- लिपेडेमा और मोटापा एक जैसे दिखते हैं, लेकिन दोनों अलग कंडीशंस हैं। लिपेडेमाः- मेडिकल कंडीशन, फैट जांघों, कूल्हों, पैरों में वेट लॉस मुश्किल, दर्द, भारीपन, नीले निशान, पैरों का आकार असामान्य.सामान्य मोटापा- ज्यादा फैट जमा होना, फैट पूरे शरीर में, वेट लॉस संभव, दर्द या नीले निशान नहीं, पैर सामान्य, पूरे शरीर पर असर। सवाल- लिपेडेमा के लक्षण क्या हैं? जवाब- लिपेडेमा में शरीर के निचले हिस्से में असामान्य रूप से फैट जमा होने लगता है। इसके साथ दर्द, भारीपन और सूजन जैसी समस्याएं हो सकती हैं। लिपेडेमा के प्रमुख लक्षणः- कुछ मामलों में बांहों में फैट। पैरों का आकार बढ़ना। पैरों में भारीपन, दर्द, सूजन।' जांघों, कूल्हों में फैट बढ़ना। छूने पर दर्द महसूस होना। ज्यादा थकान होना। प्रभावित हिस्से पर नीले निशान। स्किन के नीचे गांठें महसूस होना। गंभीर मामलों में चलने में दिक्कत। सवाल- किस स्थिति में डॉक्टर को दिखाना जरूरी है? जवाब- इन स्थितियों में डॉक्टर से कंसल्ट करें- जांघों, कूल्हों या पैरों में लगातार चर्बी बढ़े। डाइटिंग और एक्सरसाइज के बावजूद फैट कम न हो। इसके साथ दर्द, सूजन, भारीपन हो। स्किन पर नीले निशान पड़ रहे हों।चलने-फिरने में दिक्कत हो। सवाल- डॉक्टर लिपेडेमा का पता कैसे लगाते हैं? जवाब- पॉइंटर्स से समझिए- डॉक्टर मरीज के लक्षण के आधार पर मेडिकल और फैमिली हिस्ट्री की जानकारी लेते हैं। इसके बाद प्रभावित हिस्सों की जांच करते हैं। टिश्यू, सूजन के पैटर्न और पैरों के आकार का आकलन करते हैं। लिपेडेमा की पहचान मुख्य रूप से क्लिनिकल जांच के आधार पर की जाती है। जरूरत पड़ने पर अल्ट्रासाउंड, एमआरआई या अन्य टेस्ट से अन्य कारणों का पता लगाया जाता है। सवाल- लिपेडेमा का इलाज क्या है? जवाब- लिपेडेमा का कोई स्थायी इलाज नहीं है। लेकिन इसके लक्षणों को मैनेज करने के लिए डॉक्टर लाइफस्टाइल में बदलाव, थेरेपी या अन्य उपचार की सलाह देते हैं। इसमें ये विकल्प शामिल हो सकते हैं- रेगुलर एक्सरसाइज (जैसे वॉकिंग, साइकिलिंग और स्विमिंग)। एंटी-इंफ्लेमेटरी और हार्ट-हेल्दी डाइट। कंप्रेशन स्टॉकिंग्स का इस्तेमाल। स्किन केयर के लिए मॉइश्चराइजर और जरूरत पड़ने पर दवाएं या सप्लीमेंट्स। लिम्फैटिक ड्रेनेज मसाज। सूजन या अन्य लक्षणों को कंट्रोल करने के लिए दवाएं। जरूरत पड़ने पर पेन्यूमैटिक कंप्रेशन डिवाइस का उपयोग। गंभीर मामलों में लिपोसक्शन सर्जरी। बीएमआई 35 से ज्यादा होने पर कुछ मरीजों में बैरिएट्रिक सर्जरी। सवाल- अगर लिपेडेमा का इलाज न कराएं तो क्या कॉम्प्लिकेशंस हो सकते हैं? जवाब- समय पर इलाज न कराने पर लिपेडेमा धीरे-धीरे बढ़ सकता है और कई तरह की समस्याएं हो सकती हैं, जैसेकि- चलने-फिरने में दिक्कत। लिम्फेडेमा या लिपो-लिम्फेडेमा। नसों से जुड़ी समस्याएं। जोड़ों की दिक्कत। फ्लैट फीट की समस्या। डिप्रेशन, एंग्जाइटी का रिस्क। सवाल- लिपेडेमा का जोखिम कम करने के लिए क्या करें? जवाब- समय पर पहचान और हेल्दी लाइफस्टाइल से लिपेडेमा की रफ्तार और लक्षणों को काफी हद तक कंट्रोल किया जा सकता है। सवाल- लिपेडेमा से पीड़ित व्यक्ति की दिनचर्या और खानपान कैसा होना चाहिए? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- रोजाना हल्की-फुल्की फिजिकल एक्टिविटी करें। स्विमिंग, वॉकिंग या साइकिलिंग को प्राथमिकता दें। ताजे फल, सब्जियां, साबुत अनाज और लीन प्रोटीन खाएं। ज्यादा नमक, चीनी और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड से बचें। दिनभर पर्याप्त पानी पिएं। वेट कंट्रोल करें। पर्याप्त नींद लें। स्ट्रेस मैनेज करें।डॉक्टर की सलाह से रेगुलर दवाएं और थेरेपी लें। लिपेडेमा से जुड़े कॉमन सवाल-जवाब- सवाल- भारत में यह बीमारी कितनी कॉमन है? जवाब- भारत में लिपेडेमा के मामलों के सटीक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। हालांकि डॉक्टर अब पहले की तुलना में इस बीमारी की पहचान ज्यादा कर रहे हैं। फिर भी कई लोग इसे सामान्य मोटापा समझ लेते हैं। इसलिए बड़ी संख्या में केस डायग्नोस नहीं हो पाते। सवाल- क्या बीएमआई सामान्य होने पर भी लिपेडेमा हो सकता है? जवाब- हां, सामान्य श्रेणी वाले लोगों में भी लिपेडेमा हो सकता है। सवाल- क्या लिपेडेमा में दर्द होता है? जवाब- हां, पैरों में दर्द, भारीपन और छूने पर दर्द महसूस होना इसके आम लक्षण हैं। सवाल- क्या यह बीमारी जानलेवा है? जवाब- नहीं, लिपेडेमा जानलेवा नहीं है। लेकिन इलाज न कराने पर इससे रोजमर्रा की जिंदगी प्रभावित हो सकती है। सवाल- क्या लिपेडेमा में वजन कम नहीं होता है? जवाब- हां, लिपेडेमा से प्रभावित हिस्सों में जमा फैट पूरी तरह कम नहीं होता है। सवाल- क्या एक्सरसाइज से लिपेडेमा ठीक हो सकता है? जवाब- नहीं, हालांकि इससे दर्द, सूजन और चलने-फिरने में सुधार हो सकता है। सवाल- कौन-सी एक्सरसाइज लिपेडेमा में फायदेमंद है? जवाब- वॉकिंग, स्विमिंग, साइकिलिंग और लो-इम्पैक्ट एक्सरसाइज फायदेमंद मानी जाती है।

बॉयफ्रेंड मेरी ही सहेली को कर रहा डेट, दोनों मिलकर मुझसे खेल रहें, खुद को कैसे समझाऊ

नोएडा। सवाल- मेरी उम्र 20 साल है। मैं 6 महीने से कॉलेज में एक लड़के के साथ रिलेशनशिप में थी। मैंने उसे अपनी एक फ्रेंड से मिलवाया। हम तीनों साथ में कभी-कभी हैंगहाउट करते थे। एग्जाम्स के बाद समर वेकेशन में मैं 2 महीने के लिए पर घर चली गई। जब मैं वापस आई, तो वे दोनों मुझसे ठीक से बात नहीं कर रहे थे। अब पता चला है कि वे दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। मुझे बहुत बुरा लग रहा है और मैं खुद को चीटेड फील कर रही हूं। मैं समझ नहीं पा रही हूं कि इस सिचुएशन को कैसे संभालूं और अपने इमोशन्स से कैसे डील करूं? विषय को समझेंगे सवाल जवाब के माध्यम से एक्सपर्टः डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा जी के साथ- जवाब- सवाल पूछने के लिए आपका शक्रिया। 20 साल की उम्र जीवन का वह पड़ाव है, जब भावनाएं काफी तेज होती हैं। आपने बताया है कि बॉयफ्रेंड और दोस्त ने मिलकर आपका दिल तोड़ा है। साइकोलॉजी में इसे 'डबल बिट्रेयल' (दोहरा विश्वासघात) कहते हैं। अभी आपको ये ट्रेजेडी जैसा महसूस हो रहा है, लेकिन विश्वास करिए 10 साल बाद यह घटना एकदम सामान्य लगेगी। चलिए आपकी पूरी सिचुएशन समझते हैं और उसके सॉल्यूशन पर बात करते हैं। 20-25 साल की उम्र एक्सप्लोर करने और अनुभव बटोरने की होती है। इस उम्र में हम रिश्ते, करियर और खुद को समझना शुरू करते हैं। इस दौर में बने रिश्ते अक्सर भावनाओं पर आधारित होते हैं। इसलिए ये बहुत स्थायी नहीं होते हैं। इस घटना को 'ट्रेजेडी' की तरह देखने की बजाय 'लाइफ लेसन' की तरह देखना बेहतर होगा, क्योंकि यही अनुभव आपको आगे बेहतर निर्णय लेने में मदद करेगा। अभी पूरी उम्र और बेहतर संभावनाओं का आसमान आपके सामने खुला है। अपनी भावनाओं को दबाएं नहीं-धोखा मिलने पर दुखी होना, गुस्सा आना या रोना बिल्कुल सामान्य है। खुद को यह कहने की जरूरत नहीं है कि, 'मुझे इतना परेशान नहीं होना चाहिए।' बल्कि खुद से कहें- 'मुझे दुख हो रहा है और यह बिल्कुल सही है।'रोना आए तो रो लें। किसी भरोसेमंद दोस्त से बात करें। अपनी भावनाओं को डायरी में लिखें। यही हीलिंग का पहला कदम है। यह एक नई शुरुआत है-अभी आपको लग सकता है कि सब खत्म हो गया, लेकिन सच्चाई इससे अलग है। ब्रेकअप अंत नहीं, प्यार में धोखा मिलने पर लोग अक्सर खुद में कमियां ढूंढने लगते हैं। वह कारण खोजते हैं कि उन्हें धोखा क्यों मिला है। जबकि असल में कमी सामने वाले की नीयत में होती है। इस तरह के इंसिडेंट्स को अनुभव की तरह लेना चाहिए। आगे आसमां और भी है-यह सोचिए कि जो इंसान मात्र 2 महीने आपकी एब्सेंस में आपकी सहेली के साथ रिश्ते में आ गया, क्या वह कभी आपके प्रति सीरियस था? शायद नहीं। इसलिए जो आपका था ही नहीं, उसे खोने का अफसोस ही क्यों करना है। 20 की उम्र जीवन का केवल एक छोटा सा हिस्सा भर है, पूरी फिल्म अभी बाकी है। अपनी नजरें समेटने की बजाय सामने देखिए, अभी पूरा आसमान बाकी है। आपको भविष्य में ऐसे कई सच्चे लोग, वफादार दोस्त और बेहतर रिश्ते मिलेंगे, जो आपकी कद्र करना जानते होंगे। इस एक कड़वे अनुभव को अपनी पूरी जिंदगी न समझें, बल्कि इसे एक नई और बेहतर शुरुआत का मौका मानें। क्या करें? भावुकता से निकलकर अब आपको एक्शन-ओरिएंटेड होना पड़ेगा। जब आप व्यस्त रहेंगी तो इस दुख से उबरने में मदद मिलेगी। करियर और स्किल्स पर ध्यान दें- अपनी पढ़ाई, इंटर्नशिप या किसी नई भाषा/हुनर को सीखने में अपनी पूरी ऊर्जा लगा दें। आपकी सफलता ही आपका सबसे बड़ा बदला होगा। सोशल मीडिया डिटॉक्स- उसे ब्लॉक या अनफॉलो करना कमजोरी नहीं, बल्कि एक तरह से 'मानसिक सुरक्षा' है। इसलिए उसकी लाइफ अपडेट्स देखना बंद करें। नए लोगों से मिलें- अपनी दुनिया को उस एक कॉलेज ग्रुप तक सीमित न रखें। नए क्लब जॉइन करें, वर्कशॉप में जाएं। हॉबीज को समय दें- डांस, पेंटिंग, राइटिंग या स्पोर्ट्स, जो भी आपको खुशी देता है, उसमें भाग लें। इससे आपका 'डोपामाइन' लेवल बढ़ेगा और कॉन्फिडेंस वापस आएगा। हीलिंग पर ध्यान दें-इस दुख से उबरने की यात्रा में आप किसी दिन आप बहुत अच्छा महसूस करेंगी और किसी दिन बहुत तकलीफ भी होगी। यह सामान्य है। बस उस पुराने घाव को बार-बार 'चेक' करके कुरेदना बंद करें। डबल बिट्रेयल से निपटने के 5 गोल्डन रूल-1. खामोशी में ही ताकत है-उसे फोन या मैसेज करके यह न बताएं कि आप कितनी दुखी हैं। भावनाओं को उसके सामने जाहिर करने की बजाय डायरी में लिखें या किसी भरोसेमंद से बांटें। 2. जवाब की उम्मीद छोड़ दें-उससे यह पूछकर वक्त बर्बाद न करें कि ऐसा क्यों किया? सफाई की उम्मीद आपको उसी दुख में अटकाए रखेगी। इसलिए सच को स्वीकार कर आगे बढ़ें। 3. खुद पर विश्वास बनाए रखें- दो गलत लोगों की वजह से खुद को कम न आंकें। याद रखें, आप आज भी उतनी ही अच्छी इंसान हैं। सिर्फ इसलिए कि किसी ने भरोसा तोड़ा, पूरी दुनिया को बुरा न समझें। अच्छे लोग और सच्चे दोस्त अभी भी आपकी लाइफ में आएंगे। 4. कॉलेज में गरिमा रखें-जब भी वे सामने आएं, न गुस्सा करें और न ही रोएं। बस ऐसे रहें जैसे वे कोई अजनबी हों। आपका आत्मविश्वास और आपकी मुस्कान यह साबित करेगी कि आपकी खुशी किसी इंसान की मोहताज नहीं है। 5. खुद को दोष न दें-'मैंने गलत इंसान पर भरोसा क्यों किया' जैसे विचार छोड़ दें। भरोसा करना आपकी अच्छाई थी, कमजोरी नहीं। खुद को माफ करें और खुद से प्यार करें। आप एक नई और खूबसूरत शुरुआत की हकदार हैं। अंतिम सलाह-20 साल की उम्र में दिल टूटने पर ऐसा लगता है जैसे दुनिया रुक गई हो, लेकिन सच ये है कि आपकी कहानी अभी शुरू हुई है। आपको आगे बेहतर लोग, बेहतर रिश्ते और ढेर सारी खुशियां मिलेंगी।

13 साल की बेटी हकलाती है,बच्चे मजाक उड़ाते हैं, क्लास में कुछ बोलती नहीं, हमेशा चुप रहती है,कैसे हेल्प करूं

जयपुर। विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं इंदौर से हूं। मेरी 13 साल की बेटी हकलाती है। हमने इसे सुधारने की बहुत कोशिश की। डॉक्टरों को दिखाया, स्पीच थेरेपिस्ट के पास गए, लेकिन कोई खास सुधार नहीं हुआ। वो जैसे-जैसे बड़ी हो रही है, अपने बोलने को लेकर बहुत कॉन्शस होती जा रही है। बचपन से ही बच्चे स्कूल में उसका मजाक उड़ाते रहे हैं। इसलिए वह क्लास में भी कुछ नहीं बोलती। अब तो सबसे अलग-थलग और चुपचाप रहने लगी है। हमें समझ नहीं आता कि हम क्या करें। उसे कैसे समझाएं, कैसे सपोर्ट करें। जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। सबसे पहले तो मैं यह बताना चाहूंगी कि आप अकेली नहीं हैं। आपकी तरह बहुत से माता-पिता इस स्थिति से गुजरते हैं। हकलाना कोई 'कमजोरी' नहीं है, बल्कि यह एक स्पीच फ्लुएंसी डिसऑर्डर है, जो अक्सर भावनात्मक दबाव, आत्मविश्वास की कमी या न्यूरोलॉजिकल कारणों से जुड़ा होता है। 'द स्टटरिंग फाउंडेशन' के मुताबिक, दुनियाभर में लगभग 1फीसदी यानी 8 करोड़ से ज्यादा लोग हकलाते हैं। महिलाओं की तुलना में पुरुषों में यह समस्या लगभग चार गुना ज्यादा होती है। करीब 5फीसदी बच्चे उम्र के किसी-न-किसी दौर में हकलाहट का सामना करते हैं। इनमें से लगभग 75फीसदी बच्चे बड़े होते-होते ठीक हो जाते हैं, जबकि करीब 1फीसदी में यह समस्या लंबे समय तक बनी रहती है। आपकी बेटी अभी टीनएजर है। ये उम्र वैसे भी थोड़ी वलनरेबल होती है। ऐसे में उसका कॉन्शस होना और क्लास में बोलने से बचना बिल्कुल स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। लेकिन अच्छी बात यह है कि सही सपोर्ट और समझदारी से आप इसमें सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं। बच्चा रुक-रुककर क्यों बोलता है? बच्चे का रुक-रुककर बोलना सिर्फ एक साधारण बोलने का तरीका भर नहीं है। इसके पीछे कई कारण होते हैं। हर बच्चे में इसकी वजह अलग हो सकती है। कुछ बच्चों में यह डर या झिझक से जुड़ा होता है, तो कुछ में सोचने और बोलने की गति में तालमेल न होने से होता है। कई बार घर का माहौल, पेरेंट्स का व्यवहार और बच्चे के अपने अनुभव भी इस पर असर डालते हैं। इसलिए इस समस्या को समझने के लिए इसके असली कारण तक पहुंचना और उसे समझना जरूरी है। बच्चे पर इसका क्या असर पड़ता है? जिन बच्चों को बोलने में समस्या होती है, वे सोचते हैं- 'मैं ठीक से बोल नहीं पाता/पाती।''लोग मुझे जज करेंगे।' 'सब मेरा मजाक उड़ाएंगे।' 'मेरा चुप रहना ही बेहतर है।' यही सोच धीरे-धीरे बच्चे पर हावी हो जाती है। लंबे समय में उसके मनोविज्ञान पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जो बच्चे हकलाकर बोलते हैं, उन्हें सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की होती है कि उन्हें समझा जाए, उन्हें जज न किया जाए और उन्हें सपोर्ट किया जाए। ऐसे में पेरेंट्स का पहला कदम बच्चे को तुरंत सुधारने की कोशिश करना नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित और सहज महसूस कराना होना चाहिए। जब बच्चा बिना डर और झिझक के अपनी बात कह पाएगा, तभी उसकी बोलने की फ्लुएंसी धीरे-धीरे अपने आप बेहतर होने लगेगी। इसलिए जरूरी है कि पेरेंट्स धैर्य रखें और सही तरीके से उसका साथ दें। नीचे ग्राफिक में ऐसे ही आसान और एक्शन लेने योग्य टिप्स दिए गए हैं। आइए अब इन पॉइंट्स को विस्तार से समझते हैं- 1. बच्चे की बात ध्यान से सुनें, बच्चे की बात पूरी होने दें। बीच में उसकी बात खुद पूरी न करें। क्यों जरूरी?जब बच्चे को बिना जज किए सुना जाता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। फायदा-बच्चा खुलकर बोलता है। झिझक कम होती है। 2. इमोशनल सेफ्टी देंबच्चे से रोज 10-15 मिनट बिना किसी जजमेंट के बात करें। जब वह बोले तो बीच में टोकने या सुधारने से बचें। उसकी बात पर रिएक्ट करने की बजाय पहले उसे ध्यान से सुनें। 'मैं तुम्हारे साथ हूं,' जैसे भरोसा देने वाले शब्द कहें। उसके डर या शर्म को हल्के में न लें। घर में ऐसा माहौल बनाएं, जहां वह खुलकर बोल सके। क्यों जरूरी? जब मिलने पर धीरे-धीरे सबकुछ सामान्य हो जाता है। फायदा-बच्चा खुलकर अपनी बात रखने लगता है। आत्मविश्वास बढ़ता है। बोलने का डर कम होता है। पेरेंट्स और बच्चे के बीच बॉन्ड मजबूत होता है। हकलाहट धीरे-धीरे कम हो जाती है। 3. कोशिश की तारीफ करें-रिजल्ट की नहीं, कोशिश की तारीफ करें। छोटे-छोटे सुधार को नोटिस करें। पॉजिटिव शब्दों का इस्तेमाल करें। क्यों जरूरी? तारीफ बच्चे को आगे बढ़ने के लिए मोटिवेट करती है।फायदा- आत्मविश्वास बढ़ता है। बच्चा प्रयास करना जारी रखता है। 4. बुलीइंग को इग्नोर न करें स्कूल में बुलीइंग होने पर टीचर से बात करें। बच्चे को जवाब देने के तरीके सिखाएं। क्यों जरूरी? बुलीइंग बच्चे के आत्मसम्मान को गहराई से प्रभावित करती है। फायदा-बच्चा खुद को सुरक्षित महसूस करता है।डर और शर्म कम होती है। 5. बच्चे की ताकत पहचानें-उसकी रुचियों और टैलेंट पर ध्यान दें। उसे उन एक्टिविटीज में प्रोत्साहित करें, जो उसे पसंद हो।उसकी उपलब्धियों को नोटिस करें। क्यों जरूरी? जब बच्चा अपनी स्ट्रेंथ पहचानता है, तो वह अपनी कमजोरी से ऊपर उठ पाता है। फायदा-आत्मसम्मान बढ़ता है। पॉजिटिव सोच विकसित होती है। 6. बच्चे को जज न करें- 'तुम सही से क्यों नहीं बोलते?' जैसे सवाल न पूछें। दूसरे बच्चों से तुलना न करें। उसके बोलने की स्पीड को एक्सेप्ट करें। क्यों जरूरी? जजमेंट बच्चे में शर्म और डर पैदा करता है। फायदा-बच्चा सहज महसूस करता है। खुद को स्वीकार करना सीखता है। 7. पॉजिटिव स्टोरीज सुनाएं-ऐसे लोगों की कहानियां सुनाएं, जिन्होंने हकलाहट के बावजूद सफलता पाई। मोटिवेशनल उदाहरण दें। स्टोरी के जरिए आत्मविश्वास बढ़ाएं। क्यों जरूरी? रोल मॉडल बच्चे को उम्मीद और प्रेरणा देते हैं। फायदा-बच्चा खुद को सीमित नहीं समझता है। उसे आगे बढ़ने का हौसला मिलता है। 8. धैर्य बनाए रखें-बच्चे को समय दें। बहुत जल्दी सुधार की उम्मीद न रखें। शांत और सपोर्टिव रहें। क्यों जरूरी? हकलाहट में सुधार एक धीमी प्रक्रिया है। इसलिए धैर्य बनाए रखना जरूरी है। फायदा-बच्चा दबाव महसूस नहीं करता है। धीरे-धीरे सुधार होने लगता है। 9. प्रोफेशनल हेल्प लें-स्पीच थेरेपिस्ट से सलाह लें। जरूरत हो तो काउंसलिंग कराएं। नियमित फॉलो-अप रखें। क्यों जरूरी? कभी-कभी सही दिशा के लिए एक्सपर्ट गाइडेंस जरूरी होती है। फायदा-सही तकनीक से सुधार तेज होता है। बच्चे को प्रोफेशनल सपोर्ट मिलता है। 10. कम्युनिकेशन पर फोकस करें-धीरे और स्पष्ट बोलने का उदाहरण दें। बच्चे को बोलने के लिए पूरा समय दें। बातचीत का माहौल हल्का रखें। क्यों जरूरी? अच्छा कम्युनिकेशन बच्चे को बिना दबाव के खुद को एक्सप्रेस करना सिखाता है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।